सकारात्मक स्पंदन पुष्टि यात्रा - ५३

गोवर्धन धारण पुष्टि आचरण

Vibrant Pushti

" गृह सेवा "
यह कैसा सत्य है!
हमारे पूर्वजों के पूर्वजों के पूर्वजों ने ब्रह्मसंबंध करके अपने घर श्री वल्लभाचार्य जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर
गृह सेवा का आरंभ किया 🙏
ब्रह्मसंबंध - अनोखा सिद्धांत
गृह सेवा - अनोखा सिद्धांत
भक्ति में लीन होना - सिद्धांत
जीव - आनंदी
जन्म - आनंदी
संसार - आनंदी
जीवन - आनंदी
धर्म - आनंदी
कर्म - आनंदी
परंपरा - आनंदी
घर ही हवेली - घर ही मंदिर
तो क्यूं जाना कहीं ओर!
तो क्यूं हमारे श्री प्रभु हमारे आंगन पधारे?
हमारे यहां इसलिए पधारे 🌷
ब्रह्मसंबंध किया 🙏
भक्ति मंत्र दिया 🌷
आत्मा परमात्मा का एकात्म 🙏
हमारे नैनों में बसे
हमारे अधरों पर रमे
हमारे कर्णो में गूंजे
हमारे तन में नाचें
हमारे मन में स्थिरे
हमारे धन में बिखरे
हमारे ....
यही तो है सांझ सवेरा
दूर हो सदा अंधेरा 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बचपन - एक उम्र

स्नातक - एक उम्र

माता-पिता का त्याग - जीवन की शुरुआत

लग्न - जीवनसाथी

माता - एक जीवन आधार संस्कार

पिता - एक अंकुश जीवन सिद्धांत

पुत्र - एक वंश

पुत्री - एक अखंड धारा

युवा - एक उम्र

पुरुषार्थ - एक उम्र

एक - एकांत

अकेले - मनन चिंतन

बिलकुल अकेले - पुत्र पुत्री आश्रय

अकेले - जीवन आश्रम यज्ञ

बस अकेले - अंतिम यज्ञ

बस - जाना दूर कहीं दूर कहीं दूर - सब छोड़ 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ठहर जाइयेगा ठहर जाइयेगा

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

नहीं जा पाइयेगा नहीं जा पाइयेगा

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

नैनों में बसे हो

मन में छूपे हो

अधर पर रटें हो

नज़र पर फिरते हो

कहीं नहीं जा सकते हो

यहीं ही ठहरे हो

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

प्रीत की कैसी असर है

विरह की कैसी अगन है

सांसों में घुल-मिले हो

दिल से दिल जुड़े हों

नहीं जाइयेगा ठहर जाइयेगा

कान्हा हमसे दूर कहां जाइयेगा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मान्यता - परंपरा और विज्ञान यह ऐसा विश्वास - श्रद्धा और आस्था है कि मनुष्य अपने आपको इससे धारण करता है - अपनाता है और खुद को लुटा देता है 🙏

समय - जीवनशैली - परिस्थिति में मान्यता, परंपरा और विज्ञान को समझता, अनुभव करता और करवाता जीवन कृतार्थ करता रहता है 🙏

कोई अलग मान्यता, परंपरा और विज्ञान को देखते मनुष्य अचंभित रह कर वह अपनी स्वीकृति को वह बदलता है और यह बदलाव ही समय परिवर्तन की परिभाषा हो जाती है 🙏

यह समय धारा बहते बहते मनुष्य, मनुष्य जीवन और मान्यता, परंपरा और विज्ञान को बदल बदल कर परिवर्तन परिवर्तन और परिवर्तन 🙏

बस! जीवन जीवन और जीवन समाप्त और गति करने का मार्ग प्रस्थान 🙏

जिसमें हम जीते जीते उपलब्धि, उपाधि को पा कर जो परिवर्तन धारा को बहाते है वह धारा को अपनाने के लिए सिद्धांत, नियम, प्रथा आदि को शिक्षित करके एक नई मान्यता, परंपरा और विज्ञान प्रकाशित करते है 🙏

बस! यही सत्य, यही विश्वास और यही धर्म 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसी रीत है और कैसी जीत है

जो हारे वह पाये

जो जीते वह गंवाए

सीता भी यहां बदनाम हुई

मीरा भी यहां भटकती रही

राधा भी यहां तड़पती रही

वैसे

राम भी ऐसे अकेले जीये

कृष्ण भी ऐसे झझुमते रहे

तो भी

सीता धरती में समा गई

मीरा द्वारकाधीश में लीन हो गई

है रीत जगत की है ऐसी

जो आत्मा से परमात्मा

और परमात्मा से आत्मा विलीन जाएं

न कोई तन से मिला

न कोई धन से मिला

जिन्हें केवल प्रेम पाया

जिन्हें केवल प्रीत प्रजवल्लि

यही सत्य है यही प्रेम पूजा है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏🌹🙏

मिलन - नैनों से

न जान न पहचान न जात न पात

पहुंचते है मंदिर

तो मिलते है नैन

तो होते है दर्शन

दर्शन से जागता है प्रेम

प्रेम से है करुणा

न जान न पहचान न जात न पात

कैसा मधुर मनन

कैसा मधुर चिंतन

कैसा मधुर चितवन

आत्मा परमात्मा से मिलन

मिलन से है वरण

न जान न पहचान न जात न पात

" दर्शन " 🌷🙏🌷

हे प्रभु! निकट निकट तु श्याम

हे प्रभु! रटत रटत तु सखी प्रेम

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कितना मधुर दर्शन 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज एक जिज्ञासु मित्र ने प्रश्न पूछा

श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी क्यूं बने?

वार्ता में सैद्धांतिक अर्थ होना आवश्यक है 🙏

यह प्रश्न का उत्तर अनेकों मन, विचार, सत्संग और स्व आध्यात्मिक शैक्षणिक योग्यता से अपने स्व मनन और चिंतन से रजुआत करे तो अच्छा सत्संग हो सकता है 🙏

" जहां अज्ञानता होती है वहां धर्म का ढोल अधिक पीटा जाता है " 🌹🙏🌹

हम स्नातक होते हुए सत्य से वंचित हो कर मान्यता और अंधश्रद्धा के चक्रव्यूह में फस कर अपने आपको महान, आध्यात्मवादी और धर्म उपासक समझते खुद को, कुटुंब को, समाज को बरबाद करते रहते है 🙏

हम कैसे शिक्षित और ज्ञानी है! 🙏

विख्यात सत्य द्रष्टा - श्री अखा और श्री कबीर ने सत्य का आचरण किया 🙏

" पत्थर पूजे देव - जल देख करे स्नान "

🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹

कैसे हो वंश उत्तम 🙏 कैसे हो कुटुंब उत्थान 🙏

कैसे हो समाज विश्वासयुक्त 🙏

कब छूटेगा एक दूसरे को लुटना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

दूर हां दूर
दूर कहीं दूर
नहीं सामने इसलिए दूर
नहीं नैनों में इसलिए दूर
नहीं ख्यालों में इसलिए दूर
नहीं यादों में इसलिए दूर
नहीं फोटो फ्रेम में इसलिए दूर
नहीं संसार में इसलिए दूर
नहीं रंग में इसलिए दूर
नहीं स्वर में इसलिए दूर
नहीं स्पर्श में इसलिए दूर
नहीं नज़र में इसलिए दूर
सच कहना! यह दूर है?
सच समझना! यह दूर है?
नहीं! बिलकुल नहीं!
दूर कौन है!
जो नि:संदेह नहीं
जो नि:स्वार्थ नहीं
जो निडर नहीं
जो निश्चित नहीं
जो विश्वास नहीं
जो श्रद्धालु नहीं
जो करुणा नहीं
जो धर्मी नहीं
जो सत्य नहीं
जो भक्त नहीं
जो प्रेमी नहीं
जो विरही नहीं
वह दूर है 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा

कितना खेल रचाएं नजर आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

पलकें बंध कराएं किवाड़ बंध कराएं

दीवारें खड़ी बंधाएं अंधेरे कोटड़ी बिठाइए

नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

मन कहीं भटकाइएं तन कहीं तोडाइएं

जीवन कहीं छूपाइएं धन कहीं ललचाएं

नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

कितना खेल रचाएं नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

यह ऐसा रंग है यह ऐसा सत्संग है

जो पंकजे दिल खिलता है

जो श्री वल्लभ शरण पाता है

पुष्टि रंग रंगाएं व्रज रज पाइयेगा

नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

मेरे प्रिय कृष्ण मेरे प्रिय कान्हा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं बदलता जाता हूं

मेरे विचार से

मेरी परिस्थितियों से

मेरे संग से

मेरी शिक्षा से

मेरे मन से

मेरी योग्यता से

मेरे धन से

मेरी अपेक्षा से

मेरे रंग से

मेरी विश्वास नियति से

मेरे अपनायें से

मेरी धारणा से

मेरे स्वीकार्य से

मेरी क्षमता से

मेरे धर्म से

मेरी मर्जी से

मेरे अहसास से

मेरी वासना से

मेरे अहंकार से

मेरी वारसाई से

मेरे ज्ञान से

मेरी द्रष्टि से

मेरे ध्यान से

मेरी श्रद्धा से

मेरे कर्म से

मेरी करुणा से

मेरे सत्य से

मेरी अंधश्रद्धा से

मेरे वचन से

मेरी मूल्यांकन से

मेरे स्वार्थ से

मेरी घृणा से

मेरे कथन से

मेरी द्रढता से

मेरे रोग से

मेरी प्रीत से

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

और

हम कोई और को निश्चित बनाएं!

तो हम क्या?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"सुखियां सब संसार है खावें और सोवें
दु:खियां दास कबीर है जागे और रोवे "
मैं
मेरा कुटुंब
मेरा समाज
मेरी गली
मेरा गांव
मेरा शहर
जहां भी देखता हूं बस सब खाते पीते और मस्त
जहां भी देखूं बस सब खानें के लिए दौड़े
जहां भी देखूं बस स्व को भुलाने के लिए पीये
हम कैसे!
और
शायद कोई कबीर का दास हो
वह एकांत में बैठकर बस जागता जागता कहींओं को जगाने की कोशिश करें
शायद कोई कबीर का दास हो
वह एकांत में बैठकर बस तमाशा देख कर रोवे ही रोवे
कैसी है यह जिंदगानी है
जो चार दिनों की कहानी है
जो कोई खेलें अपनो से
जो कोई घायल हो अपनो से
जो कोई मारे अपनो को
जो कोई सहारे अपनो के
बिन कर्मे सबकुछ मांगे
बिन धर्मे सबकुछ पाने
दौड़े और दौड़ाएं चारों ओर
कहें कबीरा यही चक्की
जिसमें सब कोई अपने पराएं
हर कोई खुद से दूर दूर और दूर
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल भक्त पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल प्रेमी पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल निश्चयी पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल निःस्वार्थी पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल द्रष्टावान पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल निरपेक्ष पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल करुणामयि पाता है

" सबल " यह शब्द का अर्थ केवल सत्यधारी पाता है

जो जीवन में माता-पिता को न समझे वह जीवन सबल नहीं है - चाहे कितने भी अमीर हो 🙏

जो जीवन में भाई - बहन के रिश्ते को न समझे वह जीवन सबल नहीं है - चाहे कितने भी साथ हो 🙏

जो जीवन में पति - पत्नी के बंधन को न समझे वह जीवन सबल नहीं है - चाहे कितने भी आत्मीय हो 🙏

" सबल " बहुत ही उत्तम पुरुषार्थ है 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नज़र में उम्मीद
नैनों में उम्मीद
होंठों पर उम्मीद
स्वरों में उम्मीद
चहेरे पर उम्मीद
कानों पर उम्मीद
मुस्कान पर उम्मीद
मन में उम्मीद
स्पंदन में उम्मीद
तरंग में उम्मीद
स्पर्श में उम्मीद
क्रिया में उम्मीद
साथ में उम्मीद
दूरी में उम्मीद
लिखने में उम्मीद
सुनानें में उम्मीद
सुनने में उम्मीद
हर तरह उम्मीद
हर वजह उम्मीद
हर सहर उम्मीद
हर स्थिति में उम्मीद
उम्मीद से ही जीना
उम्मीद से ही दौड़ना
उम्मीद से ही रहना
उम्मीद से ही हम
हां! यही सत्य है
हां! यही सिद्धांत है
हां! यही प्रेम है
हां! यही विश्वास है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti " 🌷🙏🌷
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे माता-पिता तुम्हें प्रणाम 🙏
मेरे श्री गुरुदेव तुम्हें प्रणाम 🙏
तुम्हें प्रणाम 🌷 तुम्हें प्रणाम 🌷
तुमसे ही मेरा अस्तित्व
तुमसे ही मेरी पहचान
तुमसे ही मेरी धर्मता
तुमसे ही मेरी कर्मता
तुम्हें प्रणाम 🌷 तुम्हें प्रणाम 🌷
मेरे स्पर्शीय पत्नी तुम्हें वंदन 🙏
मेरे स्पर्शीय पुत्री तुम्हें वंदन 🙏
तुम्हें वंदन 🌷 तुम्हें वंदन 🌷
तुमसे ही मेरा मान
तुमसे ही मेरा सम्मान
तुमसे ही मेरी प्रकृति
तुमसे ही मेरी प्रवृत्ति
तुम्हें वंदन 🌷 तुम्हें वंदन 🌷
मेरे अंगज भ्राता तुम्हें नत मस्तक 🙏
मेरे वंशज पुत्र तुम्हें नत मस्तक 🙏
तुम्हें नमस्कार 🌷 तुम्हें नमस्कार 🌷
तुमसे ही मेरा आशरा
तुमसे ही मेरा सहारा
तुमसे ही मेरा दर्पण
तुमसे ही मेरा तर्पण
तुम्हें नमस्कार 🌷 तुम्हें नमस्कार 🌷
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जन्म जीवन जगत
कर्म धर्म परम
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जान जाती थी दूर नैनों से

मैंने उनका जाना भी देखा है

जान झुरती थी तुटे मन से

मैंने उनका तड़पना भी झेला है

हे कान्हा! तु कहीं भी हो

पर तेरा प्रेम में डूबना मैंने पहचाना है

हे कान्हा! तु ऐसा बसा है यह दिल में

दिल सामने झझुमते कहता है

राधा! तेरे चरणों में मुझे रहना है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

होली की शुभकामनाएं 🌷👫🌷

खेलत हम आज रंगों भरी होली

एक एक रंग में जीवन की जोरी

बरसे आनंद उमंग की फौरी

सखा! आओ खेलें रंगों भरी होली

ठुमक ठुमक पायल बाजे

ढम ढम नगारा गाजे

गूंजें चारों ओर रंगों की धूम

सखी! आओ खेलें रंगों भरी होली

लाल पीला रंग मन उजारे

सफेद हरा रंग तन उबारें

नीला भूरा रंग प्रेम हिलोरें

प्रिये! आओ खेलें रंगों भरी होली

होली की शुभकामनाएं 🌷👫🌷

खेलों आनंद उमंग रंगीली होली 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷👫🌷

" वो नहीं सुनता जिसको जल जाना होता है
जल जल कर वही एक सत्य हो जाता है
जिन्हें जीवन कहते है 🌷🙏🌷"
" राधा "
" कृष्ण "
" मीरा "
" सीता "
" राम "
" शबरी "
" अहल्या "
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जीवत जीवत एक पल सत्य जीवत
अचूक एक किरण उगाय
एक एक किरण साथ साथ उगाय
अचूक एक दीपक प्रज्वलित होय
एक एक दीपक साथ साथ प्रज्वलाय
अचूक एक ज्वाला प्रचंड रुप धाय
चाहे कितना अंधकार चाहे अज्ञान
नष्ट ध्रष्ट त्रृष्ठ षष्ठ भष्ट सारा अंहकार

हम कितने भाग्यशाली है 🙏
हमारे आगे कहीं कहीं पूर्वजों जन्में
अगीनत चरित्रों अखंड सिमाचिन्ह
एक एक किरण होय
सदा उजाला सदा प्रज्वलित किरण
हममें हमसे विकसित होय
पर
हम ऐसे कैसे जो किरण किरण बुझोय
हमसे कलयुग हमसे दुरुपयोग हमसे वियोग
हम कैसे कैसे जीवत जीवत जीव
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जब जब उन्हें देखुं नयन तरसने लगे

जब जब उन्हें निहारु पलक अपलक थंभाऊ

थरथर थरथर अधर थडके राअ्अ्धा स्मरण फडफडे

सररररर सररररर स्वर गूंजे कर्ण खड़े उठें राधा सुनें

मलक मलक चहेरा खिलें कमल रंग समान

हे राधा! हे प्रिया! यूं ही तेरा दीदार करता हूं

सांस सांस भर तुम्हें प्रेम नमन भरता रहूं

राधा!🌷 राधा!🌷 राधा!🌷 राधा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
मेरे मनपावन! मेरे मनभावन!
जहां जहां तु है
वहीं वहीं मेरा दामन
मेरे मनमोहन! 🌷
रज रज में तु है
ज़र्रा ज़र्रा में मैं हूं
कण कण में तु है
क्षण क्षण में मैं हूं
तु मुझमें है मैं तुझमें हूं
कभी न बिछड़ ने की प्रेमी हूं मैं
साथ निभायेगा सदा प्रीत पाइयेगा
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
सांस सांस में तु है
रग रग में मैं हूं
रंग रंग में तु है
अंग अंग में मैं हूं
तु कहीं है मैं वहीं हूं
कभी न दूरी की परछाई हूं मैं
शरण धरिएगा सदा चरण रखिएगा
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
मेरे मनपावन! मेरे मनभावन!
जहां जहां तु है
वहीं वहीं मेरा दामन
मेरे मनमोहन! 🌷
ऐसा नशा है ऐसी असर है
न दिल होंस में है
न मन काबू में है
बस! तु ही तु है तु ही तु है
कभी न बिछड़ीएगा कभी न छूटीएगा
मेरे मनमोहन! मेरे प्राणजीवन!
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बहुत सारे विचारों के समूह को मेरे विचारों से जोड़ता हूं

उसमें से कोई सकारात्मक धारा जागृत हो तो समझना सत्य का ज्ञान मुझमें अपना अस्तित्व बना रहा है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी बड़ी गुथ्थी की कोई कुछ भी कहें तो उसे ज्ञान, सूचन, विनंती, माहिती या सलाह के बदले " बिजनेस या धंधा " समझा जाय! 🌷🙏🌷

कोई भी कुछ भी कहें या बोले तो वह उनका स्वार्थ ही समझा जाय! 🌷🙏🌷

कोई अनुभव से कहे - कोई संशोधन से कहे - कोई निष्कर्षता से कहे तो भी उसे केवल " प्रोफेशनल " या " व्यापारीक ही समझा जाय 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 कमाल का समय - काल - युग है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

ज्ञान - नहीं समझ 🙏

शिक्षा - नहीं समझ 🙏

संवाद - नहीं समझ 🙏

मार्गदर्शन - नहीं समझ 🙏

आज्ञा - नहीं समझ 🙏

सिद्धांत - नहीं समझ 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कौन कैसे जीये?

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कुंजबिहारी! हे गिरिराज धारी!

हे बांकेबिहारी! हे व्रजरज धारी!

हे सत्याचारी! हे विश्वा धारी!

हे प्रेमाचारी! हे न्याया वारी!

हे गोपीजन हारी! हे वेणु धारी!

हे मयूरपंख धारी! हे कृष्ण मुरारी!

हे यमुना विहारी! हे राधा वारी!

हे भक्ताचारी! हे श्याम धारी!

हे कृष्ण! तेरे ही आधारी!

तेरे ही आश्रयी!

तेरे ही आग्रही!

तुझ पर ही वारी!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

भगवान के कार्य को कौन समझ सकते है?

कथाकार

साहित्यकार

सेवाकार

कीर्तनाकार

यात्राकार

भजनाकार

वंशाधर

आज्ञाकार

पूजाकार

दर्शनाकार

पैसाकार

रुपाकार

कलाकार

दयाकार

दानाकार

प्रवचनकार

मनोरथाकार

भेंटकार

या

भक्ताकार

🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹

अपनी समझ को सत्यार्थ करो 🙏

🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

न यह जमीं थी न आसमां था

न यह सूरज था न यह चंद्र था

न यह सागर था न यह हवा थी

न फूल थे न सितारें थे

तब तेरा मेरा प्रेम था है और रहेगा 🌷

हे कृष्ण! तु परमात्मा तो मैं आत्मा हूं

यह परम प्रेम से तु परमात्मा

यह परम अंश से मैं जीवात्मा

जब से तु जागा तब से मेरा उदभव

जब से तुने निभाया तब से मेरा आरव

हे कृष्ण! तु प्रियतम तो मैं प्रिय

यह आराधना से तु परमात्मा

यह साधना से मैं जीवात्मा

न यह सृष्टि थी न यह वृष्टि थी

न यह द्रष्टि थी न यह पुष्टि थी

न यह तृष्टि थी न यह यष्टि थी

हे कृष्ण! यही ही हमारा परम सत्य है

जिससे तु सत्यार्थी है मैं सत्याग्रही हूं

जिससे हम एक एकात्मा है

जिससे हम एक प्रेमात्मा है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यार! आपकी उम्र तो!

आपतो बिल्कुल युवा लग रहे हो!

आप सही और सटीक काम करते हो!

आप जबरदस्त हो!

आपकी कुशलता! आपकी तकनीक बहुत उत्तम है!

आप हर ख्याल से सब निभाते हो!

आपसे न कोई भूल या नुकसान नहीं हो सकता!

आप न कभी बहाना! झूठ नहीं बोल सकते!

कमाल है! 🌷🙏🌷

वंदन है आपको 🌷🙏🌷

धन्य है आप! 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ज्ञान घटे नर मूढ़ की संगति

बुद्धि घटे चित्त विषय लरमाएं

तेज घटे पर नारी संगति

शक्ति घटे बहुत भोजन खाएं

प्रेम घटे नित ही कुछ मांगत

मान घटे नित पर घर जाएं

पाप घटे हरि के गुन गाएं "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हम ही एकांत में बस यही व्याक्यों बार बार मनन - चिंतन और मंथन करते करते अपने आपको ही पढ़ते रहे 🙏

कुछ तो अमृत पाएंगे

हर तरफ़ - हर हर में कुछ तो है

पर

हमसे ही परिवर्तन का प्रारंभ हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

जोगन - योगन - गोपन - प्रेमन - सखीन - आत्मन

हे माधव!

तु कहे यह प्रेम की कैसी कक्षा है?

तु एक और बाकी अनेक

प्रेम लीला का स्पर्श और असर कैसी!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી શ્રીનાથજી તારું સ્મરણ મને કામ નું

શ્રી શ્રીનાથજી તારું સ્મરણ મને કામ નું

આંખ ખુલે ત્યારે " શ્રી નાથજી શરણં મમઃ "

અધર ખુલે ત્યારે " શ્રી નાથજી વરણં મમઃ "

શ્વાસ ભરું ત્યારે " શ્રી નાથજી પ્રાણં મમઃ "

કદમ ચાલુ ત્યારે " શ્રી નાથજી દંડવત કરું "

ચરણ પડું ત્યારે " શ્રી નાથજી વંદનં મમ; "

દાસ પુષ્ટિ નો દાસ " શ્રી નાથજી વૈષ્ણવ મમઃ "

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🙏🌷🙏

" व्रज परिक्रमा "

कदम कदम पर मैं लुटाऊं अपनी जीवन यात्रा

समझता हुआ तबसे जो किया वह समर्पित करूं

जिसने जन्म दिया उन्हीं का एक एक ऋण चुकाऊं

जो धर्म अपनाया उसका हर सिद्धांत वंश शिक्षाऊं

एक एक रास्ता पर कर्म फल झंडा लहराऊं

मन के सारे क्रियाओं को रज रज से मिलाऊं

तन के सारे अंगों को प्रकृति में समाऊं

धन के सारे व्यवहार को मनोरथों से न्योछावरुं

जीवन के सारे काल को पंचमहाभूतों में समाऊं

जागते जागते आत्मा को परमात्मा का दास बनाऊं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हाथ में पुष्टि झंडा लहराते मैं चला

पुष्टि पताका फहराते मैं चला

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

एक एक स्थली श्री श्रीनाथ की गली

एक एक पंथ श्री पुष्टि चरित्र का कंथ

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

एक एक कुंज श्री यमुना की निकुंज

एक एक दर्शन श्री पुष्टि रंग का अर्चन

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

एक एक बैठक श्री वल्लभ की गाथा

एक एक झारीजी श्री पुष्टि रस सिंचन

मैं चला! मैं चला! मैं चला!

पुष्टि पताका फहराते मैं चला 🙏

पुष्टि परिक्रमा के सर्वे वैष्णवों को दंडवत प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

हम जब संकल्प करते है - मुझे परिक्रमा करनी है 🙏

परिक्रमा का संकल्प उसी घड़ी होता है जब मन स्थिर होता है 🙏

मन स्थिर होने से अपना कालचक्र, भाग्यचक्र, जीवनचक्र और अपना आंतरिकचक्रो भी एक ही कक्षा में होते है 🙏

परिक्रमा इतनी अनोखी प्रक्रिया और लीला है जो हमें भव भव के चक्र से भी मुक्त करती है 🙏

जगत का कोई जीव ऐसा नहीं है जो चक्र की गति में नहीं है। हर कोई चक्र में है और चक्र से बाहर जाने के लिए परिक्रमा ही ऐसी गतिविधिनिधि है जो इससे मुक्त करवाती है 🙏

परिक्रमा में भक्ति करना है - ज्ञानी होना है। जिससे स्व को पहचान सके।

श्री वल्लभाचार्यजी ने जो परिक्रमा की है - वह एक एक चक्र को समझना है 🙏

पैदल चलने से - झारीजी भरने से - दान दक्षिणा देने से - स्थली स्थली दर्शन करने से परिक्रमा करते है - नहीं नहीं 🙏 यह तो यात्रा है।

परिक्रमा! और व्रज परिक्रमा!

गहराई से भी अध्ययन करे तो श्री कृष्ण की पूरी लीला का तात्पर्य समझे तो अवश्य पायेंगे परिक्रमा की योग्यता, यथार्थता, प्रमाणता और सार्थकता। 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

एक गहरी नींद से जागा तो पाया एक टीमटीमाता दीया - दीपक

दीपक की ओर नजर पहुंचते ही अंधेरा तो दूर हुआ पर साथ साथ दिखे वर्तुल 🙏

अपनी ज्योत से टीमटीमाता दीपक जिसकी लौ डगमगाती अपना तेज फ़ैला रही थी 🙏

मन को जगाया

तन को थपथपाया

एक ज्योत अपने आपमें परिक्रमा करती है 🙏

नजदीक पहुंचा तो देखा एक स्थिर बिंदु से उनका तेज चारों ओर प्रदक्षिणा कर रहा है 👍

अपने आंतर आतम ज्योत को स्थिर कर - मन को एकाग्र कर - तन को चाहें कितना भी डगमगाएं! अवश्य तेज जागेगा - प्रकाश पसरेगा और अज्ञान का अंधकार नष्ट होगा 👍

परिक्रमा का सही तात्पर्य यही है 🙏

व्रज - हमारा पवित्र, विशुद्ध और सत्य परम प्रेम धर्म बिंदु है और उसकी परिक्रमा अर्थात हमारा तेजोमय प्रेमानंद - प्रेमामृत - प्रेमास्पद - प्रेमार्चन - प्रेमार्पण 🙏

हे परिक्रमा पाथेय! हमारा नमन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बार बार सोचता हूं
कितना दौड़ूं!
ऐसा करुं वैसा करुं!
मेरे ख्याल से यही सही है
मेरे ख्याल से यही!
तुम उससे ऐसे हो!
तुम इससे ऐसे हो!
कैसी समझ पाई!
कोई बात नहीं!
अपने लिए सोचों का अर्थ सिर्फ खुद का ही सोचना!
जो करो वह खुद के लिए!
जो सफल हो उसका जानों और खुद अपनाओं!
कॉपी पेस्ट से ही हम सही पाएंगे!
समय समय से खेलों मजबूरी का लाभ लो!
नहीं नहीं मेरे दोस्तों! नहीं नहीं!
हर कोई ऐसा तो कौन बनेगा उत्तम - श्रेष्ठ और उच्च!
हर कोई विचार करें - विश्वास से ही जीना है
हर कोई कार्य करें - जिसमें सत्यता हो
हर कोई व्यवहार करें - जिसमें योग्यता हो
हमारे पास भी यही ही धरती, यही ही आकाश, यही ही जल, यही ही वायु और यही ही सूर्य है
तो भी हम हमारा देश छोड़कर बाहर !
कैसा वेश हमारा!
आज अमेरिकन अमेरिका में है
आज जापानी जापान में है
आज अंग्रेजी अंग्रेज़ में है
और हम हिन्दुस्तानी हर हर देश भटकते है!
कैसे है हम!
🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्त्री के अनेकों रुप

स्त्री का अनेकों स्वरुप

स्त्री का अनेकों रंग

स्त्री का अनेकों अंतरंग

स्त्री का अनेकों संग

स्त्री का अनेकों सत्संग

स्त्री का अनेकों अंग

स्त्री का अनेकों उमंग

स्त्री का अनेकों मन

स्त्री का अनेकों सुमन

स्त्री का अनेकों रमण

स्त्री का अनेकों स्मरण

स्त्री का अनेकों चरण

स्त्री का अनेकों आचरण

स्त्री का अनेकों अर्थ

स्त्री का अनेकों पुरुषार्थ

स्त्री का अनेकों आनंद

स्त्री का अनेकों परमानंद

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" नव रात्रि " की यही है लीला 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

હે ઈશ્વર!
મારાથી જ સૂરજ ઊગ્યો
મારાથી જ આકાશ જાગ્યું
મારાથી જ ફૂલ ખીલ્યાં
મારાથી જ આંખો ઊઘડી
મારાથી જ ગીત રચાયું
મારાથી જ સહું એ સમજ્યું
મારાથી જ
સર્વે મારાથી જ
તો જ હું તારો અંશ
તો જ તું ઈશ્વર
બાકી તો...........

લોપ માં પણ તું
અલોપ માં પણ તું
દ્રષ્ટિ માં પણ તું
દ્રશ્ય માં પણ તું
🌷🙏🌷🙏🌷
નથી કદી નિષ્ફળતા
નથી કદી આથમતા
નથી કદી કરમાતા
નથી કદી અસૂરતા
ચોક્કસ સંભળાય છે
ભલે કદી મનને લાગે
પણ
અવશ્ય કંઈક જાગે છે
અવશ્ય કંઈક ખીલે છે
અવશ્ય કંઈક પ્રક્ટે છે
અવશ્ય સત્ય પ્રજવલ્લે જ છે 🙏
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" राधा कृष्ण " की प्रेम समय 🙏

कहां भी हो - कहीं भी है

सदा एक रहते थे

" कोई घड़ी न जाएं बित "

जो राधा कृष्ण के साथ ही है और थी

जो कृष्ण राधा के साथ ही है और थे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

प्रेम की यही तो उत्कृष्टता है

प्रेम की यही तो उत्कंठा है

प्रेम की यही तो उपासना है

प्रेम की यही तो आराधना है

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

न कोई घड़ी बिछड़ना

न कोई घड़ी छूटना

न कोई घड़ी भटकना

न कोई घड़ी भूलना

🌷🌷🌷🌷🌷

मिलना भी घड़ी घड़ी

एक रहना भी घड़ी घड़ी

साथ निभाना भी घड़ी घड़ी

पास न हो तो भी सांस में घड़ी घड़ी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

न कोई घड़ी बिते बिन राधे - बिन कृष्ण 🌷

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" राधा कृष्ण " 🌷🙏🌷

जय जय श्री गोवर्धननाथ

जय जय श्री श्रीनाथजी

जय जय श्री गोकुलनाथ

जय जय श्री यमुनाजी

कृपा है मुझ पर

द्रष्टि है मुझ पर

है मुझ पर पुष्टि

दंडवत प्रणाम करुं

नीश घड़ी घड़ी 🙏

हे मेरे संस्कारेश्वर!

नीत नीत तुम्हारे दर्शन ध्याऊं

रीत रीत पुष्टि प्रीत समाऊं

गोवर्धननाथ की रज चढ़ाऊं

श्री श्रीनाथजी को नैनन बसाऊं

श्री गोकुलनाथ की कंठी धरूं

श्री यमुनाजी का रंग रंगाऊं

यही पायो श्री वल्लभाचार्यजी पथ

यही गायो श्री अष्टसखा के स्वर

यही सोहायो श्री विठ्ठलनाथजी संग

यही शृंगायो श्री पुष्टि भक्त के अंग

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन कौन और कौन?
यह धरती मेरी है?
यह आकाश मेरा है?
यह हवा मेरी है?
यह अग्नि मेरा है?
यह जल मेरा है?
यह सागर मेरा है?
यह पर्वत मेरा है?
यह नदी मेरी है?
यह जंगल मेरा है?
यह प्रकृति मेरी है?
यह सृष्टि मेरी है?
बहुत ही गंभीरता से सोचा - चिंतन किया - अध्य्यन किया
न मेरा मेरा और मेरा है 🙏
हर कोई कहता है - मेरा नहीं
तो किसका है?
आप कहो अपनी सोच - विचार - चिंतन और अध्य्यन से
की
मेरा नहीं तो किसका है?
अरे! सरलता की बात है - भगवान का है🙏
अरे! भगवान कौन? किसीने समझा? कौन भगवान?
शास्त्रों ने कहा
आचार्य ने कहा
ऋषि मुनियों ने कहा
ज्ञानी ओं ने कहा
भक्तों ने कहा
भावुक ने कहा
अनुभवों ने कहा
आत्मसातों ने कहा
आध्यात्मिकों ने कहा
हर कोई ने कहा 🌷🙏🌷
भगवान भगवान भगवान 🌷🙏🌷
अवश्य सोच कर स्व को ही कहना 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज परिक्रमा "

सांस सांसों में व्रज महक भरी

मन मनन में व्रज स्मृति भरी

नैन नैनों में व्रज दर्शन भरा

अधर अधरों पर व्रज कथा भरी

कर्ण कर्णों में व्रज संकीर्तन भरा

अंग आंचल में व्रज रंग भरा

रोम रोम में व्रज स्पंदन भरा

हस्त हस्तों में व्रज सेवा भरी

कंठ कंठील में व्रज गूंज भरी

प्राण हृदय में व्रज लीला भरी

कदम कदम में व्रज रज भरी

क्रिया कर्म में व्रज धर्म भरा

संस्कार संस्कृति में व्रज जीवन भरा

जन्म जीवन में व्रज यात्रा भरी

मन तन धन में व्रज वास भरा

हे राधा! हे कृष्ण! सदा देजो तम निकट वास 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 💐🙏💐

एक कामना को मारा - नहीं

एक लोभ को मारा - नहीं

एक माया को मारा - नहीं

एक अपेक्षा को मारा - नहीं

एक क्रोध को मारा - नहीं

एक धूर्तता को मारा - नहीं

एक झूठ को मारा - नहीं

एक आडंबर को मारा - नहीं

एक अंधश्रद्धा को मारा - नहीं

एक स्वार्थ को मारा - नहीं

एक अज्ञान को मारा - नहीं

तो हम विजयादशमी कैसे मनाएं - उजाएं और उत्साहे? 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरी नज़र जहां पहुंचें
वहां वहां तेरा दर्शन है - इसलिए है 🙏

मेरे स्वर जो पुकारें
वह तेरा स्मरण है - इसलिए है 🙏

मेरा उच्छ्वास जो निकलें
वह तेरी महक है - इसलिए है 🙏

मेरा हस्त जो उठें
वह तेरी सेवा है - इसलिए है 🙏

मेरे चरणों जो बढ़े
वह तेरी परिक्रमा है - इसलिए है 🙏

मेरा मन जो ख्यालें
वह तेरी सुश्रुषा है - इसलिए है 🙏

मेरा तन जो रंगें
वह तेरा रंग है - इसलिए है 🙏

मेरा धन जो वित्तें
वह तेरा ज्ञान है - इसलिए है 🙏

मेरा जीवन जो गुजरें
वह तेरा पुरुषार्थ है - इसलिए है 🙏

यही है वह दिन रात को यज्ञ धरना
यही है वह सवेरा सांझ को कर्म करना

यही है वह समय को समझते रहना
हर घडी - हर काल - हर भविष्य तुममें जगाना
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दीक्षा " दीक्षा अवश्य हमें स्वीकारना चाहिए 🙏

दीक्षा संस्कार है 🙏

दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए 🙏

दीक्षा सर्व श्रेष्ठ संस्कार है 🙏

दीक्षा जीवन में एक मातापिता अपने को देते है🙏

दीक्षा आचार्य - गुरु हमें दे सकते है 🙏

माता-पिता की दीक्षा बिल्कुल आवश्यक और सही है 🙏

दीक्षा आचार्य - गुरु की स्व तय कर सकते है या परंपरागत स्व समझ कर तय कर सकते है 🙏

दीक्षा - स्व को शिक्षित - संस्कार सभर - संस्कार युक्त - स्व पहचान की योग्यता और सहायतार्थ है 🙏

जो माता-पिता शिक्षित न हो पर संस्कारी होना आवश्यक है 🙏

वैसे ही जो आचार्य - गुरु शिक्षित होना - संस्कारी होना आवश्यक है 🙏

माता-पिता और आचार्य - गुरु शिक्षित होने का अर्थ है - निष्णात, जीवन की सार्थकता, योग्यता उपलब्ध होना चाहिए 🙏

केवल भौतिक सुख और समृद्धि में उत्कर्ष करना - अपेक्षित परिणाम से सामर्थ्य धरना दीक्षा नहीं है 🙏

दीक्षा दु:ख को नष्ट करने हेतु नहीं है

दीक्षा सीखाता है दु:ख क्या है और क्यूं है? यही दु:ख को जगत जीवन से मिटाना है जो कभी न आएं 🙏

दु:ख ही न आएं तो स्वगत ही समृद्ध हो सकते है 🙏

दीक्षा का उपयोग दु:ख हरण के लिए हो ही नहीं सकता - वह अंधश्रद्धा है - गलतफहमी है, गैरमार्गी है 🙏

दु:ख संजोग और परिस्थितियों से निर्माण हो तो उसे स्व ज्ञान और पुरुषार्थ से ही निवारण कर सकते है 🙏

यह निवारण की योग्यता दीक्षा से ही उपलब्ध है 🙏

कोई किसीका दु:ख मिटा सकता नहीं है 🙏

श्री राम - श्री कृष्ण ने अपना हर दु:ख और कष्ट माता-पिता, आचार्य - गुरु जो शिक्षित थे उनसे दीक्षा संस्कार पा कर, अपना पुरुषार्थ जागृत कर ही निवारण किया 🙏 उनके चरित्रों में आचार्य वशिष्ठ और विश्वामित्र और सांदीपनि आश्रम में आचार्य ने जो दीक्षा दी नहीं की - शिक्षित किया तभी तो उनके जीवन का संजोग और परिस्थितियों से दु:ख - कष्ट को अपने श्रेष्ठ और उत्तम पुरुषार्थ से मिटाया 🙏

यह दीक्षा निरपेक्ष है🙏🌷🙏🌷 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज अपनी जगह
आसमां अपनी जगह
घूमें धरती घूमें चंद्र
घूमें सारा जहां
हम एक जन्म धारी
चारों ओर अनेकों सवारी
चक्र चक्र चक्र घूमें सारी
जल परिवर्तना अग्नि परिवर्तन
वायु परिवर्तना धरती परिवर्तन
आकाश परिवर्तना प्राण परिवर्तन
जो जो जीव जो जो जीवन
जगत प्रकृति सृष्टि ब्रह्मांड
अनेकों जन्म अनेकों जीवन
साथ साथ हां साथ साथ
न कोई जाने हर कोई अन्जाने
जाना आना आना जाना बार बार
एक से अनेक अनेकों से एक
यही धर्म विज्ञान ज्ञान प्रज्ञान
जल से सीखें जीना
अग्नि से सीखें जीना
वायु से सीखें जीना
धरती से सीखें जीना
आकाश से सीखें जीना
जीना जीना जीना जीना
यही सत्य! यही कारण!
भ्रमण भ्रमण भ्रमण भ्रमण
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बिन बांधे दोर

मैं बंधी तेरे नजर से संग

प्रेम की रीत यही

कहीं भी हो

तेरे ख्यालों से बंधे अंग

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

तु सोच ले राधा!

मैं मथुरा घुम्यों

मैं द्वारका घुम्यों

पर हर घड़ी बंध्यों

तुम प्रीत संग

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

शरद पूनम रात्रि

सोलहें शृंगार चांदनी भांति

बिन संशय बिन कोई बंधन

राधे! खेलें हम प्रेम रसली

इतना भिगा पूरा भिगा

जनम जनम तु मेरी बंसरी

कभी अधर से बंधी

कभी हस्त से जुड़ी

सदा आत्म अंग से अड़ी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

राधा! 🌷🙏🌷

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे चरणों में श्री नाथ मेरे दंडवत स्वीकार 🙏
तेरे शरणों में श्री नाथ मेरे दासत्व स्वीकार 🙏
दंडवत स्वीकार में तुम्हारा चरणों स्पर्शाय
दंडवत स्वीकार में तुम्हारा चरणों स्पर्शाय
मेरा जीवन!
हां मेरा जीवन कृत कृत हो जाय 🌷
तेरे चरणों में श्री नाथ मेरे दंडवत स्वीकार 🙏

दासत्व स्वीकार में मेरा जन्म संपूर्णाय
दासत्व स्वीकार में मेरा जन्म संपूर्णाय
मेरा आत्मा!
हां मेरा आत्मा तुझमें समाय
तेरे शरणों में श्री नाथ मेरा दासत्व स्वीकार 🙏

श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
रमण करो मुझमें रमण करो
रमण करो मुझमें रमण करो
मेरा मन तन!
मेरा मन तन!
हां मेरा मन तन तुझमें बसाय 🌷
श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
श्री श्री नाथ श्री नाथ मुझमें रमण करो
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
श्री श्रीनाथजी बावा की जय 🙏
श्री वल्लभाधीश की जय 🙏
श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय 🙏
श्री गिरिराज धरण की जय 🙏
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम भयी श्याम की प्यारी

प्यार प्यास में श्याम धरी

एक एक घड़ी एक एक लडी

श्याम भयी 🌷🙏🌷

मन श्याम तन श्याम

अंग श्याम संग श्याम

श्याम भयी 🌷🙏🌷

न कोई पास न कोई आस

न कोई भेद न कोई अवैध

श्याम भयी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

सच हम कैसे है!

हर कोई के सामने गरीब हो कर अमीरी दिखाते है

और

मांगते रहते है हर कोई की कृपा या दया🙏

सच हम कैसे है!

हर कोई के सामने तवंगर का दिखावा करते है

और

चिल्लाते रहते है अपना चरित्र संस्कार चिरते हुए🙏

सच हम कैसे है!

झुकाते है दुनिया अपने अहंकार घमंड से

और

सामने सत्य का किरण उठा चूर चूर जीवन बिखर गया 🌷

सच हम कैसे है!

खुद को पूजवाने अपने विश्वास को बेच देते है

और

खुद माता-पिता होते हुए अपने माता-पिता को बेच देते है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी अदभुत संस्कृति है हमारी 👇

हम नदी को पूजते है और उन्हें गंदगी में बरबाद कर देते है 😱

हम वनस्पति को पूजते है और उन्हें कांट कांट कर वैरान कर देते है 😱

हम पर्वत को पूजते है और उन्हें तोड़ मरोड़ कर खत्म कर देते है 😱

हम धरती को पूजते है और उन्हें हमारी इच्छाओं का भार से दबोच देते है 😱

हम अग्नि को पूजते है और उन्हें निम्न उर्जा में सम्मिलित से अशुद्ध कर देते है 😱

हम मंदिर को पूजते है और उन्हें अश्लीलता के रंग से विकृत कर देते है 😱

न समझना प्रकृति को

न समझना संस्कृति को

न समझना कृति को

बस यूं ही जीते जीते सबको मारते जाना 😱

एक ही ख्याल

आडंबर करना

ज्ञानी समझना

निकंदन निकंदन और निकंदन 😱

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷😱🌷

जीने का अर्थ है जागना

जीने का अर्थ है संवरना

जीने का अर्थ है पुरुषार्थना

जीने का अर्थ है आहुतना

जीने का अर्थ है संस्कृतना

जीने का अर्थ है मार्गना

जीने का अर्थ है यज्ञना

जीने का अर्थ है त्यागना

जीने का अर्थ है सर्जना

जीने का अर्थ है खिलना

जीने का अर्थ है साधना

जीने का अर्थ है आराधना

जीने का अर्थ है प्रेमना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज हमारा पुरुषार्थ का संस्कार संस्कृति दीपक प्रज्वलित करके, हमारे आत्मा का उजास परब्रह्म परमात्मा को आहूत करते है 🙏

दीपक प्रज्वलित की शुभकामनाएं 🙏

आज हवेली मंदिर गया 🙏

सबके मुखड़े पर अति आनंद उमंग और उत्साह उल्लास झलक रहा था 😀

हर कोई अपने आपको धन्य धन्यता की अनुभूति करते थे 🌷 हर कोई एक दूसरे से " जय श्री कृष्ण " जय श्री कृष्ण " कहते स्वीकारते सहजता से दर्शन करने मुख्य द्वार पर पहुंच रहे थे। 🙏

हर कोई नएं रंग-बिरंगी वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित थे, ऐसे आनंद का आविष्कार करते थे तो अपने अंतरंग को प्रज्वलित कर आत्म ज्योति से सारे स्थल को तेजोमय - प्रकाशमय करते करते दीवाली का महापर्व को झगमगाते थे। 🌷

वहां टहल पुकारी - दर्शन का समय हो गया है 🙏 हर कोई उर्मित हो कर हवेली के मुख्य चौक की और अपने कदम बढ़ा रहें थे। कोई एक ने उमंग स्वरों में धून गाई - " श्री कृष्ण: शरणं मम - श्री कृष्ण: शरणं मम " सारा स्थल " श्री कृष्ण: शरणं मम - श्री कृष्ण: शरणं मम " की गूंज से हर कोई के मन, तन और नैनों में श्री श्रीनाथजी की झांकी के लिए तड़पने लगे

अपने परम प्रिय परमात्मा को नैनों से छूने तरस रहे थे।

श्री मुख्याजी ने जैसे श्री प्रभु द्वार खोले, हर कोई उत्तेजित हो कर अपने ज्ञान भाव को लुटाने लगे - " श्री वल्लभाधीश की जय "

" श्री गुसाईजी परम दयाल की जय "

" श्री गिरिराज धरण की जय "

" श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय "

" श्री श्रीनाथजी बावा की जय "

" आज के आनंद की जय "

" आनंद कराने वाले की जय "

अपने नैनों, मन और तन में श्री श्रीनाथजी को बिराजमान कर अपने आंतर आत्मा से जोड़ने लगे 🙏

कितनी अदभुत अनोखी अनुभूति 🙏

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आप सभी को दीपावली कि शुभकामनाएं 🙏

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti " 🌷🙏🌷

વ્રજ ભૂમિ - અમારી સંસ્કૃતિ 🙏 શુભ દીપાવલી ની અનોખી પ્રભાત નાં સૂર્ય ☀ 🙏

दर्शन करने मन गया
दर्शन करने तन गया
दर्शन करने नैन गया

कदम कदम पर चल दिया
श्रीनाथजी के हवेली मार्ग

एक एक विचार पर मन कहें
एक एक डग पर तन कहें
एक एक नजर पर नैन कहें

हे श्रीनाथ! यह मन है तेरे आश
हे श्रीनाथ! यह तन है तेरे सांस
हे श्रीनाथ! यह नैन है तेरे प्यास

नील गगन से तु नीला रंग दे
नील जल से तु नीला रस दे
नील प्रकृति से निला सज दे

संकल्प संकल्प से तु प्रक्ट मेरे मन
डगर डगर पर तु चलें मेरे तन साथ
नजर नजर पर तु निहरें मेरे बसें नैन

मन से जुड़े
तन से पकड़े
नैन से बसें

तु सदा मेरे अंतरमन
तु सदा मेरे अंतरंग
तु सदा मेरे द्रष्टिसंग

द्वार खुला तु मन पाया
द्वार खुला तु तन पाया
द्वार खुला तु नैन पाया

तु मुस्कुराया मन खिल उठा
तु शृंगार सजाया तन नाच उठा
तु आर्त जगाया नैन भर आया

हे श्रीनाथ! बस अब नहीं कोई मन
हे श्रीनाथ! बस अब नहीं कोई जीवन
हे श्रीनाथ! बस अब नहीं कोई दर्शन
" Vibrant Pushti " " जय श्री कृष्ण "

एक का प्रियतम मंदिर में

एक का प्रियतम हवेली में

मैं अकेली भटकुं इधर उधर

कब खुलें दर्शन द्वार?

एक का प्रिये तरसे यमुना किनारे

एक का प्रिये झूरें वृंदावन वांटे

मैं अकेली भटकुं बिरहा मारी

कब पाऊं दर्शन लीलाधर?

इतना अवश्य कहूं

प्रियतम प्रिये तड़पें मेरा जुहार

वो कहीं भी खेलें अनेकों साथ

वह मेरा है 🌷 वह मेरा है 🌷

अवश्य छूएं मेरा प्यार 🌷

यमुना की निकुंज में

वृंदावन की गलियों में

मुझे ढूंढें मुझे पुकारें

दोनों बार बार कहीं बार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙇🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

શ્રી પ્રભુ રસ સેવામાં મગ્ન થઈ

નાચું સદા થઈ થઈ થઈ

મને શ્રી વલ્લભ બોલાવે અહીં અહીં અહીં

કરૂં સેવા હું પુષ્ટિ થઇ થઈ થઈ

મને શ્રી યમુનાજી બોલાવે નાહીં નાહીં નાહીં

કરૂં શૃંગાર હું સેવક ભઈ ભઈ ભઈ

મને શ્રી ગુંસાઈજી બોલાવે ધઈ ધઈ ધઈ

કરૂં મેવા હું અપરસ વઈ વઈ વઈ

મને શ્રી ગિરિરાજજી બોલાવે છૂઈ છૂઈ છૂઈ

કરૂં પરિક્રમા હું દંડવત દઈ દઈ દઈ

મને શ્રી બેઠકજી બોલાવે ઠઈ ઠઈ ઠઈ

ભરૂં ઝારીજી હું યમુના જળ લઈ લઈ લઈ

મને શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ બોલાવે ચઈ ચઈ ચઈ

કરૂં સત્સંગ હું વૈષ્ણવ જઈ જઈ જઈ

મને શ્રી સુબોધિનીજી બોલાવે જ્ઞઈ જ્ઞઈ જ્ઞઈ

બનુ દાસ હું પુષ્ટિ રસ પઈ પઈ પઈ

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ख्यालों की राहों में
ख्यालों की राहों में
आआआआआआआआ
ख्यालों की राहों में
हे राह! राह! राह! राह!
ख्यालों की राहों में
निरखुं मैं सांवरिया का गांव

ख्यालों की राहों में
आआआआआआआआ
ख्यालों की राहों में
निहालुं सांवरिया का नाम

यादों की लहरों में
हां! हां! यादों की लहरों में
श्याम! यादों की लहरों में
झुमे तेरा नाम 🌷

यादों की लहरों में
हो हो हो हो! यादों की लहरों में
श्याम तु भये!
हां तुम भये! तुम भये हो श्याम!

मैं निहारुं मैं निहालुं
मैं निहारुं मैं निहालुं
मैं निहारुं मैं निहालुं
निहारुं निहालुं सांवरिया का नाम 👆
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

आकाश की लालिमा

मधुर वायु की महकता

पंखीओ का कलरव

में

नई नई चेतना लेकर

नूतन वर्ष का सूरज

नवनीत नया नया रंग

कदम रखा नूतन वर्ष का

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यही रंग यही उमंग यही संग

सदा हम सबमें बना रहे

ऐसे आनंद विभोर के साथ

आप सभी को " नूतन वर्ष अभिनंदन " 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नूतन वर्ष की नूतन बात "
नहीं कोई सूचन है 🙏
नहीं कोई आवेदन है 🙏
नहीं कोई रीत है 🙏
नहीं कोई समाचार है 🙏
नहीं कोई आज्ञा है 🙏
नहीं कोई हुकम है 🙏
नहीं कोई निवेदन है 🙏
केवल एक विचार है 🙏
मित्रों!
हम जो भी उम्र के है
हम जो भी कक्षा पर है
हम जो भी शिक्षित हैं
हम जो भी धर्म अनुसार है
हम जो भी उपाध्यक्ष है
हम जो भी ज्ञानी है
हम जो भी कर्तव्य निष्ठ है
हम जो है 🙏
एक विचार आपके सामने रख रहा हूं 🙏
हम जो भी जीवन जी रहे है
सच! बिल्कुल आनंद भरा है 🙏
ऐसा क्यूं?
क्यूंकि जो कर्म करते है चाहे सुक्ष्मता से या समक्षता से अवश्य अपना भविष्य अवगत करते ही निपटता है 🙏
हम ज्यादातर सोचते है अमीर होना, समृद्ध होना, जमीनदार होना, पैसादार होना, धनवान होना 🙏
हम इसके ही चक्कर में सारा जीवन निपटाते है - यह पुरुषार्थ अधूरा है, हमें सत्य और आत्मविश्वास की राह पर चलना है।
सत्य बोलना, विश्वास करना, सेवा करना, साथ निभाना, मदद करना - तुरंत ही उनका जो भी योग, प्रयोग, संशोधन होता ही है!
वह योग, प्रयोग और संशोधन अवश्य हमें सही राह और निर्णीत करवाता है।
यह हमें झूठ बोलने से, दंभ करने से, असत्य आचरणों से दूर रखते है। 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

मेरा मन हुआ पवित्र

मेरा तन हुआ विशुद्ध

मैं हुआ श्री वल्लभ शरण रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

आशीर्वचन से ज्ञान पाया

चरणस्पर्श से सेवा ध्याया

मैं हुआ श्री वल्लभ सेवक रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

पुष्टिमार्ग सिद्धांत जीवन जताया

जन्म जीवन तात्पर्य दर्शाया

मैं हुआ श्री वल्लभ दास रे 🙏

आज पधारे घर मेरे

श्री वल्लभ चरण रे 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી ગોકુલનાથજી

જય ગોકુલેશ ગોકુલેશ ગોકુલેશ

શ્રી મદ્ ગોકુલ ગોકુલ ગોકુલ

શ્રી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી

શ્રી ગોકુલેશ શીશ નમાવી આજ્ઞા માંગું શ્રી વલ્લભા

સદા શરણ માં રાખજો ગોકુળ નાં શ્રી વલ્લભા

ચરણ સ્પર્શ માંગું હું શ્રી વલ્લભા

હે પુષ્ટિમાર્ગ રક્ષક હે વૈષ્ણવ સર્જક

મુજ જીવ ને બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા આપો શ્રી વલ્લભા

મુજ વૈષ્ણવ ને પુષ્ટિ દાસત્વ આપો શ્રી વલ્લભા

દંડવત પ્રણામ કરું હું શ્રી વલ્લભા

જય ગોકુલેશ ગોકુલેશ ગોકુલેશ

શ્રી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી ગોકુલનાથજી

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

दीपावली

नूतन वर्ष

लाभ पंचमी

युगों से आनंद उमंग और उत्साह और उर्जा भरा संस्कृति त्योहार

यह त्योहार में हम - सर्वत्र से आनंद ही आनंद लुटाते है

न कोई तृष्णा न कोई अपेक्षा

न कोई घृणा न कोई वैर

न कोई घमंड न कोई आडंबर

न किसीकी अहवेलना न किसीका अपमान

न किसीके साथ धृर्तता न किसीके साथ दुष्टता

कितना अनोखा और आह्लादायक त्योहार

यह त्योहार में

- हम अपनी आंखों का जहर

- हम अपनी कौटुंबिक वैर कटुता

- हम अपनी सामाजिक एक दूसरे को नीचा दिखाने की हरीफाई

- हम एक दूसरे का अपमान अवगुण

- हम साथ साथी का झूठ

यह सभी का त्याग और बलिदान करने का त्योहार है

चोरी चपाटी लुट और झूठ हमारा संस्कार नहीं पर साथ साथ रहने और चलने का पुरुषार्थ है

सच कहूं तो - आप सब मेरे ऐसे प्रेरणादायक उद्धारक है कि

हम सब आनंद, उमंग और उत्साह और उर्जा में एक हो कर जीये तो हर दिन दीवाली और हर दिन नूतन वर्ष

चलो यह घड़ी से संकल्प करें

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" क्यूं हारे - क्यूं हारे - क्यूं हारे "

हम हिन्दुस्तानी क्रिकेट मेच क्यूं हारे?

हम कितने भी होशियार और सशक्त हो

पर सदा अपनी होशियारी और सशक्तता को सही दिशा में योग्यता प्रदान करनी चाहिए 🙏

हमें सदा एकता में ही बंधना चाहिए 🙏

अहंकार और अभिमान अज्ञानता जताता है - जो सदा निपुणता को नष्ट करती है 🙏

हमें योग्य पद्धति से अपने आप को और अपने साथी को शिक्षित करना चाहिए 🙏

हमारी पास यह है - हम यह है - हम यह कर सकते है - हम कभी हार ही नहीं सकते! - यह धारा हमें छिन्न-भिन्न करती है 🙏

समय और परिस्थिति को जान कर, समझ कर योग्य निर्णय और स्व को और सारे साथी ओं को दीर्घ द्रष्टि से शिक्षित करना चाहिए 🙏

अति चिंतनीय 🌷🙏🌷

यही ही हमारी सफलता की प्रज्ञानता है 🙏

जागते रहो! जागते रहो! जागो जागो!

जगाओं! जगाओं! जगाओं!🌷🙏🌷

मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
ओ मुझे ले चलो श्री नाथजी
मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
अपने धाम रे
मुझे ले चलो श्री नाथजी
अपने धाम रे
मैंने सुना है श्री यमुनाजी
आपका धाम सुनहरा रे
मैंने सुना है श्री यमुनाजी
आपका धाम सुनहरा रे
जहां सदा प्रक्टे प्रकाश तेज़ रे
मैंने सुना है श्री नाथजी
आपका धाम मधुरा रे
जहां सदा म्हंके मधुर सुगंध रे
मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
अपने धाम रे
मुझे ले चलो श्री नाथजी
अपने धाम रे
मैंने सुना है श्री यमुनाजी
ओ मैंने सुना है श्री यमुनाजी
आपके धाम में वैष्णव जन रे
जो सदा पीये पुष्टि पान रे
मैंने सुना है श्री नाथजी
ओ मैंने सुना है श्री नाथजी
आपके धाम में गोपी जन रे
जो सदा लुटाएं पुष्टि रस रे
मुझे ले चलो श्री यमुनाजी
अपने धाम रे
मुझे ले चलो श्री नाथजी
अपने धाम रे
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

" प्रबोधिनी एकादशी " 🌷🙏🌷

हर भक्ति वर्धक को प्रबोधिनी एकादशी की शुभकामनाएं 🙏

देव उठी अगियारस - सोचें 🙏

देव उठी - देव उठे! क्यूं और कैसे?

चार मास पहले देव शयनी एकादशी और आज देव उठी अगियारस।

कैसी मान्यता?

अपने आपसे ही सोचें 🙏

" प्रबोधिनी एकादशी "

हमें हमारा पुरा वर्ष का पुरुषार्थ को टटोल कर हमें अपने आपको प्रबोध करना है कि मैं यह कक्षित हूं - मुझमें क्या परिवर्तन और जीवन को उत्तम करने में कहां तक सफलता पाई। 🙏

अपने आपमें प्रकाश का प्रजवल्लन को कितना है और मुझे आध्यात्मिक, जागतिक और भौतिक की कक्षा में कहां तक पहुंचा? कौन कौनसे संकल्प, मार्गदर्शन और वैविध्यता से कितना आगे के लिए जागृत होना है - यही पृथक्करण के दिन को " प्रबोधिनी एकादशी " कहते है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आहारशुद्धौ सत्व शुद्धि: सत्वात्संजायते ज्ञानम् "

गहरा जीवन सिद्धांत है - हम सोचते है 🙏

अमेरिकन पके हुए आहार खरीद कर आरोगते है 🙏

ब्रिटिशर पके हुए आहार खरीद कर आरोगते है 🙏

तो हम हिन्दुस्तानी भी पके हुए आहार खरीद कर क्यूं नहीं आरोग सकते?

अरे! बिलकुल सही 🙏 हम भी आरोग सकते है 🙏

पर 🙏

हमारे अन्न और खाद्य सामग्री के बर्तन कैसे है - समाचार पेपर, ज़हर भरी प्लास्टिक के साधन, कैसे कैसी स्थानों पर बनते है खाद्य पदार्थ - अशुद्धियां भरा स्थल और बनाने वाले 🙏

जो अन्न और जल आरोगते है ऐसे ही हमारे विचार और आचार 🙏

नहीं स्त्री अशुद्धियां का संस्कार 🙏

नहीं कोई अन्न और जल को शुद्ध रखने और पकाने का अपरस 🙏

एक खाएं तो सब खाएं 🙏

चाहे हम कितने भी ऊंचे पढ़ें हो 🙏

कोई सत्य निर्देशक टिप्पणी करें तो!

ऐसे वैसे तैसे 🙏

बाक़ी हमारी संस्कृति! 🙏

बाक़ी हमारे संस्कार! 🙏

हम ही शुद्ध! हम ही श्रेष्ठ! 🙏

हमसे सीखें और हमें सिखाएं? 🙏

कभी तो एकांत में सोचों की मैं क्या हूं?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बच्चे बड़े होते होते हर माता-पिता सोचते है उनकी पढ़ाई पूरी हो जाएं और अच्छी जोब मिल जाएं तो उनका विवाह करके मैं अपने आपको खुश नसीब समझ कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊं और समाज को एक योग्यता प्रदान करुं 🙏

माता-पिता सोचते रहते है - बेटी को अच्छा पति मिले - सही जीवन साथी मिले, सुख संपत्ति मिले और अच्छा कुटुंब मिले - न कोई तकलीफ़, न कोई हैरानी, न कोई दु:ख 🙏

रहने को अच्छा घर, जीवन निर्वाह के लिए सुख साहिबी, बस झूमती रहे, गाती रहे, नाचती रहे, आनंद विभोर और उमंग उत्साह में पलती रहे 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

गहराई से सोचें - हम ऐसे जी रहे है?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हम हमारे कुटुंब के आंगन में ऐसे जीते है?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

* मानो तो सुख - मानो तो दु:ख

बाक़ी

हर एक के जीवन की कोई कहानी है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

क्यूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः 🙏

कैसी अकेली

कैसी अलबेली

कैसी नवेली

कैसी शर्मीली

कैसी रसीली

कैसी पहेली

कैसी मनचली

कैसी सहेली

कैसी नशीली

कैसी मींचोली

कैसी चमेली

कैसी दर्दीली

कैसी रवेली

कैसी छैली

कैसी मैली

कैसी जहरीली

सदा मेरी बनके पास पास आएं ऐसी छबीली

हां! कैसी अकेली

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय भारत " जय हिन्दुस्तान "

एक एक भारतीय की प्रार्थना ने आज प्रमाणित कर दिया की " जो आत्मा से करें याचना तो श्री परमात्मा दे सफलता " 🙏

एक टनल - ४१ शूरवीर योद्धा

गर्व है सारे हिन्दुस्तान को 👍

हमारी प्रार्थना, हमारा पुरुषार्थ, हमारी आस्था, हमारा विश्वास ने आज बुलंदी छू लिया 👍

एक एक भाई हमारे सलामत हमारे साथ आ पहुंचे 🙏

धन्य है हमारी सेना 👍

धन्य है हमारी NDRF 👍

धन्य है हमारे साथ देशों 👍

धन्य है हमारे देशवासियों 👍

जीते है पर्वतों को

जीते है चट्टानों को

जीते है आंधी को

जीते है तूफान को

🙏👍🙏👍🙏👍🙏

भारत माता कि जय 🌷

कर्मवीरों की जय 🌷

👍🙏👍🙏👍🙏👍

जय हिन्द - जय भारत

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

घर घर बिराजे घर घर साजे

आनंद उमंग उर्जा उजाले

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

श्री वल्लभ आज्ञे सेवा दर्शाईं

श्री विठ्ठल राहे शृंगार सजाईं

आनंद उत्सव रंग बिखराई

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

श्री यमुना पय पान सिंचाई

श्री गिरिराज रज निज परछाई

पुष्टि प्रेम जीवन बरसाईं

" श्री नाथजी - श्री नाथजी - श्री नाथजी "

" श्री नाथजी बावा की जय " 🙏

" श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय " 🙏

" श्री गिरिराज धरण की जय " 🙏

" श्री वल्लभाधीश की जय " 🙏

" श्री गुसाईजी दासत्व की जय " 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

મારી પત્ની બિમાર છે એટલે હું એક ડૉક્ટર પાસે તેને લઈ ગયો - અમારો નંબર તપાસવામાં આવે ત્યાં સુધી મારી નજર હોસ્પિટલ ની ભીંતો વાંચતી હતી ત્યાં મારી નજર એક વાક્ય ઉપર થંભી ગઈ -

હું આ દુનિયા નો તન, મન અને ધન નાં રોગોનો નિષ્ણાત. હે ઈશ્વર! મારાથી આવનાર કોઈપણ બિમાર વ્યક્તિ ને હું અચૂક યોગ્ય સારવાર અને ઉપચાર કરી તે બિમારી થી મુક્ત કરી તંદુરસ્ત બનાવીશ 🙏

વાહ! હું અત્યંત આનંદિત થઈ ને તન, મન અને વિશ્વાસ થી તેઓને વંદન કર્યા 🙏

મારી પત્ની ને બતાવી યોગ્ય માર્ગદર્શન અને ઉપચારીક સૂચનો લઈ નક્કી કરેલ ફી ચૂકવી બહાર નીકળ્યા 🌹

એકાંતમાં બેઠો હતો અને મારું મન હોસ્પિટલ ની ભીંતો ઉપર પહોંચી અને ફરી પેલું વાક્ય મનની નજર પર સ્થિર થયું 🙏

" હું આ દુનિયા નો તન, મન અને ધન નાં રોગોનો નિષ્ણાત. હે ઈશ્વર! મારાથી આવનાર કોઈપણ બિમાર વ્યક્તિ ને હું અચૂક યોગ્ય સારવાર અને ઉપચાર કરી તે બિમારી થી મુક્ત કરી તંદુરસ્ત બનાવીશ 🙏"

મનની સ્થિરતા અને તીવ્રતા એ મને અતિ ઊંડાણ માં લઇ ગયા અને એક વિચાર જાગ્યો 🙏

" દુનિયામાં કેટલાં બધાં જુદી જુદી તન, મન અને ધન ની બિમારી નાં નિષ્ણાત ડૉક્ટરો અને સહું પારંગત તો દુનિયા નિરોગી અને તંદુરસ્ત જ હોય 👆

તો આટલી બધી બિમારીઓ કેમ?

તમામ યોગ્યતા પૂર્વક નો આહાર, વ્યવહાર અને કુશળતા થી જીવન જીવે તો બિમારીઓ કેમ?

હાં! જો ડૉક્ટર પોતે અને વ્યક્તિ પોતે તન, ન અને ધનની બિમારી ને છોડવા જ નહીં ચાહતા હોય તો અવશ્ય દુનિયા પોતેજ બિમાર રહેવા ઈચ્છે છે અને કેવળ આડંબર કે ડામાડોળ થી જ જીવવું નક્કી હોય તો તો પ્રશ્ન જ નથી - જીજ્ઞાસા નથી કે વિશ્વાસ નથી🙏

ઓહહહ! તો તો દરેક સેક્ટરનું વ્યક્તિત્વ આ જ છે અને રહેશે જ 🙏

ઓહહહ! તો તો મરતાં જ જઈએ, લૂંટાતા જઈએ, ડૂબતાં જઈએ અને તૂટતાં જઈએ 🙏

સત્ય, સચોટ અને વિશ્વાસ પૂર્ણ 🌹🙏🌹

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌹🙏🌹

જય શ્રી કૃષ્ણ 🌷🙏🌷

જીવનનું એક રહસ્ય 🌷🙏🌷

માતાપિતા અને બાળકો માટે કરેલા

એક એક વિચાર - એક એક કર્મ યાદ રાખજો.

જેમ જેમ બાળકો મોટા થતાં જાય છે અને માતાપિતા પ્રૌઢ થતા જાય છે. તેઓને એટલી બધી સમજ છે કે હું બાળક હતો ત્યારે મારા માતાપિતા કેવું જીવતા હતા અને કેવું ભવિષ્ય તૈયાર કરતા હતા.

બસ આ જ ભૂમિકા જ્યારે આપણી તે ઉંમર પર આવે છે ત્યારે જે જે અનુભવો અને જે જે પરિસ્થિતિ ઉભી થાય છે તે આપણાં જ ભૂતકાળનું ફળ જ છે.

આ જીવન નું ચક્ર છે.

આજે વારંવાર કહીંએ છે

૧. નશીબ માં હશે તે થવાનું છે.

૨. હમણાં આ ઉંમરે મઝા માણો ભવિષ્ય જે હશે તે

૩. આવું તો આવ્યા કરે અને ચાલ્યા જ કરે

ચોક્કસ સિદ્ધાંત છે 🙏

જે બીજ સ્વ વિચારે - સ્વ કર્મે રોપ્યા છે તેનું ફળ તે પ્રમાણે જ મળે 👈

એવું કેળવો અને કેળવાઓ કે જીવનની દરેક પરિસ્થિતિ અને ઉંમર માં આનંદ જ મળે 🙏

વિચારી લો 👈

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" भविष्य " भविष्य का अर्थ

आजतक के कहीं माध्यमों से मापा तोला जा सकता है कि " भविष्य " का अर्थ है

१. इतनी पूंजी इक्ठ्ठी करनी जो हमारे वंश के वंशज के वंशज सुख साहिबी में जीवन यापन करें 🙏

२. इतना बिजनेस का व्याप करना जो अनेकों पीढ़ी सदा अपने व्यवसाय से अपनी जीवन यात्राएं समृद्ध हो 🙏

३. सामाजिक स्थान और स्थिति ऐसी संवरना जो सदियों से यह नींव सुरक्षित रहें 🙏

ऐसे कितने संकल्प और सिद्धि प्राप्त होती रहें और जीवन ही जीवन बहता रहें 🙏

सोच लिया - तय कर लिया 🙏🙏

🌹🙏🌹 यही ही सामर्थ्यता है, श्रेष्ठता है - सत्यता है 🌹🙏🌹

गहरा - गहरी और कहीं उड़ाई 🙏

यही जीवन की सार्थकता, योग्यता और उपलब्धता है 🙏

मनुष्य जन्म धरा है - सोच लो 🙏

यही ही हमारा सत्य है? 🙏

गर्व से सोचो 🙏

आत्म विश्वास से सोचो 🙏

प्रमाणिकता से सोचो 🙏

आत्म ज्ञान से सोचो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

" नमस्ये " चिंतन की योग्यता और क्षमता से यह शब्द का पार्दुभाव है 🙏

श्री वल्लभाचार्यजी - श्री पुष्टि धात्री यमुनाजी को " नमामि यमुना महं " करते है 🙏

यह " नमन " का अर्थ, स्पर्श और आध्यात्मिकता आत्मसात करना अति आवश्यक है 🙏

हम जीते जाते है - जीते जाते है

हम अनेकों जन्म धरते जाते है

पर हम सत्य को शिक्षित भी नहीं करते है तो हम ज्ञान भाव भक्ति कैसे करेंगे!

आडंबर और अज्ञानता से तो हम चौरासी लाख योनियां तो क्या - हम चौरासी करोड़ योनियां जन्मों से भी हम अपने आपसे विचलित रहेंगे 🙏

हमारे संस्कारों और संस्कृति आचार्यों ने हमें जो क्षण भर की शिक्षा दी है उन्हें हमारे जीवन में अपनाने से ही हम स्व को विद्यार्थी की कक्षा में स्थापित कर सकेंगे 🙏 यही ही हमारी प्रथम प्राथमिकता है 🙏

शांत - एकाग्र - सत्य और आत्मविश्वास से ही हम हमारी आत्मा को तेजोमय और प्रेमानंद कर सकते है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री यमुना नदी का किनारा "
श्री यमुना
श्री यमुना नदी
श्री यमुना नदी का किनारा
एक एक रज और एक एक बूंद का स्पर्श करें
एक एक रज में तपश्चर्या
एक एक बूंद में प्रेम
कहीं घटमाळ से टटोलो
एक एक तपस्वी
एक एक गोपी
यह स्थली पर कौन नहीं बसना चाहे!
श्री परब्रह्म का प्राकट्य
श्री गोप गोपी का प्राकट्य
श्री सखा का प्राकट्य
श्री सखी का प्राकट्य
श्री भक्तों का प्राकट्य
श्री संस्कृति का प्राकट्य
श्री प्रेम का प्राकट्य
श्री आनंद का प्राकट्य
कौन न चाहे बार बार जन्म का!
कौन न चाहे बार बार रज में लपेटना!
कौन न चाहे बार बार बूंद पान करना!
जिससे नैन, तन, मन, धन और जीवन विशुद्ध हो
जिससे अंग, अंतरंग, रंग, संग और तरंग पवित्र हो!
जिससे सूर्य, नभ, धरती, वायु और जल मधुर हो!
हे यमुना नदी का किनारा!
शत् शत् नमन
सदा मेरा सिंचन करना
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

હો હો હો હો

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

ક્યારે કહે વલ્લભ

ક્યારે કહે વિઠ્ઠલ

ક્યારે કહે ગોવર્ધન નાથજી રે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

ઘર ઘર સેવા આડંબરી

હવેલી હવેલી પૈસા ની રળી

માર્ગ માર્ગ પુષ્ટિ રવડે છે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

કોઈ કહે મારું કુળ

કોઈ કરે સિદ્ધાંતો ધૂળ

દરેક રમાડે શ્રી વલ્લભ મૂળ

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

ઓ ઓ ઓ

વલ્લભ નામની ચુંદડી ઓઢી પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

આ આ આ

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

પુષ્ટિ દર દર ભટકે છે

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

जयती श्री यमुने 🙏

हे महाराणी श्री यमुने

स्मरण करते पुष्टि पाएं

धन्य धन्य चित्त उजालें

हे जयती श्री यमुने 🙏

मुरारी पद पंकज यमुने

पुष्टि जीव वैष्णव सोहाएं

रंग अंतरंग श्री कृष्ण रंगाएं

हे जयती श्री यमुने 🙏

ब्रह्मसूते श्री वल्लभ बांधे

पुष्टि वैष्णव माला गंठाएं

श्री श्रीनाथजी वरण घराएं

हे जयती श्री यमुने 🙏

पुष्टि धात्री पुष्टि शास्त्री

पुष्टि पात्री पुष्टि गौत्री

श्री यमुना! हे श्री यमुने

हे जयती श्री यमुने 🙏

श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भक्त तत्व - भक्ति - भक्त भक्त चरित्र "

भक्त तत्व

भक्त तत्व हम जाने, समझे, अपनाएं और पामे तो ही हम मनुष्य है 🙏

भक्त तत्व को जानना 🙏

हमारा जो अंग है

हमारा जो मन है

हमारा जो चित्त है

हमारा जो आत्मा है

हमारा जो धर्म है

हमारा जो कर्म है

जो हम जाने तो हम भक्त तत्व की दिशा की ओर गति कर सकते है 🙏

हमारा अंग अर्थात हमारे जितने भी अवयव है, हमारे जितने भी इन्द्रियां है उन्हें उत्तमता से पहचानेंगे तो ही हम भक्त तत्व को जान सकते है 🙏

हर अवयव, हर इन्द्रियां, हर रंग अंतरंग को हमें सही से पहचानना है तो ही हम उनसे जो करवाएंगे तो ही भक्त तत्व का पार्दुभाव होगा 🙏

योग - समाधि - यज्ञ - यह ऐसे साधन है जो हम अपने अंग, अंतरंग और रंग को जान सकते है, पहचान सकते है और आज्ञाकारी कर सकते है 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर दूर

हर कोई से दूर जाना है

जो यह घड़ी तक

दूर गएं जो दूर है दूर है

कितने मन से जुड़े

तो भी दूर है ओहहह दूर है

कितने आत्मा से जुड़े

दूर दूर और दूर ही है

जन्म दिया दूर दूर

संस्कृति नाम दिया दूर है

संस्कार शिक्षा सिंचा

दूर दूर कहीं दूर दूर और दूर

कोई भी दूर

मैं खुद दूर हूं कोई क्यूं नहीं दूर

कहीं कहीं से दूर

ब्रहम ब्रहमांड से दूर है

उर्जा उर्जा सांस से दूर

प्रेम उल्फत प्यार भी दूर है

वादों वचनों से दूर

अंग रंग तरंग से दूर है

यह कैसा सत्य

जो दूर दूर दूर दूर है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह नहीं जीया
वह नहीं जीया
आज नहीं जीया
कल नहीं जीया
जन्म नहीं जीया
अजन्म नहीं जीया
जिया जिया कब जीया जाएं?
कौन बताएं?
इन्होंने ऐसा जीया
उन्होंने ऐसा जीया
हर जिया से कुछ कुछ जीया
इन्होंने कहा ऐसा जीओ
उन्होंने कहा ऐसा जीओ
हर कोई ने अपनी समझ से जीया
मैं भी जीया अपनी समझ से
पर
नहीं जीवन नैया पार लगाय
आज भी हर कोई कहे
कैसे जीवन नैया पार लगाय?
जनम जनम से यह कहे
जीवन नैया पार लगाय
युग बीतें धर्म बीतें
बीतें सारे ब्रह्मांड
आज भी यही सुनु
ऐसे जीया जाएं
ऐसे जीया जाएं
ऐसे जीया जाएं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भक्ति "

भक्ति का अर्थ वही समझ सकता है जिन्हें अपने जीवन के सारे खेद और भेद मिटाएं 🙏

कोई भी भक्त चरित्र ले ले

मीराबाई 🙏

शबरी 🙏

सोक्रेटिस 🙏

अष्टसखाएं 🙏

और ऐसे कहीं है 🙏 जो हमारे जीवन को सदा प्रेरणा देते है 🙏

जीवन आनंदमय जीने का यही रहस्य है कि

" भेद और खेद मिटाएं "

जीवन का उत्तम पुरुषार्थ यही है 🙏

जो धर्म में भेद लाएं

जो कर्म में भेद करें

जो धर्म में खेद दिखाएं

जो कर्म में खेद वर्ताएं

वह नहीं तो धर्म है - नहीं तो कर्म है 🙏

यार! सच में 🌷

भेद मिटाएं 👍

खेद मिटाएं 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" लग्न - आमंत्रित - बाराती "

लग्न - यह कैसी निधि है? यह कैसी विधि है? यह कैसी तिथि है?

आमंत्रित - यह कैसा आमंत्रण है? यह कैसा आचरण है? यह कैसा आकरण है?

बाराती - यह कैसी बा-राती है? यह कैसी सा-राती है? यह कैसी विरासती है?

रीति रिवाज - आडंबर - भेद भरम और व्यापार से हम इतने लपेटाएं - इतने भरमाएं - इतने असहाएं की खुद बिकाएं - खुद लुटाएं - खुद मिटाएं

और आखिर

जनाजा 🙏

बिकाना 🙏

खोजाना 🙏

हम क्या है? हम बाराती है? हम आमंत्रित है? हम लग्निक है?

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

सोचें 🙏

हां! अवश्य सोचें 🙏

मुझे लग्न - आमंत्रण और बारात समझने से ही मेरा जीवन सुलझा रहेगा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन किसीको क्या कहें?

हर कोई जानकार - हर कोई समझदार

खुद की नजर में न कोई तकलीफ़

खुद की समझ में न कोई मुसीबत

चाहें ओर की नजर में हो तकलीफ़ - हो मुसीबत

ओर कहें - संभलो - संभालों - संवरो

तो समझें - क्यूं परेशान हो हमसे?

हम जीएं हमारी तरह!

हम जीएं हमारी डगर!

क्यूं करें हमसे बसेरा?

यहां तो मेरा नसीब! मेरा भाग्य! मेरा जीवन!

नहीं कोई अकेला! नहीं कोई जगेला!

आप अपना करों - आप अपना संभालों

मेरी नियति मेरी कृति मेरी रीति मेरी वृत्ति

क्यूं करों हैरान - क्यूं करों परेशान!

मुझे जीना मेरे हक़ से

मुझे रहना मेरे मन से

क्यूं करों बार बार एकरार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आज का जीवन - आज का मन

आज का नैन - आज का तन - आज का धन

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज से सीखा रिश्ता जोड़ने का

धरती से सीखा रिश्ता निभाने का

आसमां से सीखा रिश्ता रंगने का

सागर से सीखा रिश्ता सिंचने का

हवा से सीखा रिश्ता महकाने का

हम आनंद आनंद और आनंद है

हम रंग रुप और शृंगारमय है

हम सुख संपत्तिवान और सन्मानिय है

हम गंध सुगंध और महकते है

हम एक एकात्म और एकमय है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भीष्म पितामह "

अनोखा चरित्र हिन्दू संस्कृति का

वीर योद्धा!

संस्कृति विजय!

संस्कार शिक्षा!

कर्म पारदर्शिता!

गहराई से सोचें

भीष्म पितामह का मृत्यु तीरों से

श्री कृष्ण का मृत्यु तीर से

श्री राम का मृत्यु स्व समर्पण सर्यू नदी

कहीं विचारकों, अध्ययन आत्माओं,

कहीं चिंतनको, कहीं भक्तों।

कहीं ने अपनी अपनी धारा से बताया और कहा

कर्म का फ़ल

यह सत्यता से पर है

यह आत्मज्ञान से पर है

कुछ अलग है

अवश्य अलग है

जीवन के कहीं माध्यमों, परिस्थितियों, परिवर्तनों और परमानंद सिद्धांतों को उथामे

कोई आनंदमय धारा अवश्य पायेंगे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

जो भी चरित्र पढ़ते है - समझते है तब अवश्य ऐसा होता ही है कि

सूरज काले घने बादलों से ही निकलता है

कमल काले घने कादव में ही खिलता है

गुलाब अनेक कंटकों में ही खिलता है

तवंगर अनेकों परिस्थितियों में ही उभरता है

हम भी जीवन की अनेकों थापट से ही खड़े रहते है

हां! जीवन का पुरुषार्थ मंत्र हमें हर उत्तम फल दे सकता ही है - चाहें निधि और विधि की कोई भी कोशिश हो 🙏

हम जीवन जीत ही सकते है 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 💐🙏💐

हे श्री यमुना!

तेरा ही स्मरण धायो

चित्त द्रष्टि शरणं धायो

पुष्टि धात्री यमुना

तेरा चरित्र पद पद गायो

धन्य धन्य पुष्टि जीवन आयो

महाराणी श्री यमुना!

तेरा दर्शन मुझ नैन पायो

अंग अंग तनुनवत्व पायो

ठकुराणी श्री यमुना!

कृपा जलधि संश्रिते ठायो

मम मन: सुखं भवायो

व्रजराणी श्री यमुना!

न जातु यम यातना ढायो

जन्म जीवन समस्तदूरितक्षयो

हे कालिंदी!

हे पावनी!

हे भगिनी!

हे गोपी!

हे भक्ति वर्धिनी! 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री यमुना " 🌷🙏🌷

६० साल की उम्र हमें क्या कहती है?

७० साल की उम्र हमें क्या कहती है?

८० साल की उम्र हमें क्या कहती है?

दोस्तों! हम संस्कृति आधारित सोचें 🙈

दोस्तों! हम जीवन के हर पड़ाव आधारित सोचें 🙈

दोस्तों! हम हमारी जगत उपस्थित आधारित सोचें 🙈

दोस्तों! हम हमारी उपलब्धियां आधारित सोचें 🙈

" भगवान के पास जाना है "

उनका ज्यादा स्मरण करे और ज्यादा स्मरण में रहे तो

भगवान अपने भक्त से पूछे?

हे भक्त! तुने हमें कितना याद किया?

हे भक्त! तुने हमारे लिए क्या क्या करवाया?

हे भक्त! तुने हमारी स्थलों की कितनी यात्रा की?

कैसी मान्यता? 🙈

उम्र हमने अपने आप ६०, ७० और ८० कर दी 🙈

दोस्तों! यही मानसिकता से हम संसार को कहां ढकेलते है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙈🌷

" वैष्णव " मैं एक हिन्दुस्तानी और मेरा जन्म एक वैष्णव कुल में हुआ, ऐसा मैंने अपने माता-पिता के कहने से जाना 🙏

जब मैंने श्री नरसिंह मेहता रचित भजन सुना " वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीड पराई जाने रे "

पर दु:ख उपकार करे तो भी मन नहीं आणे रे "

मैं तो चकित हो गया

मैं भी जैसे जैसे बड़ा होता गया और समझता गया

ओहहह! कितना अनोखा और अदभुत संस्कृति और सभ्यता और संस्कार 🙏

जैसे जैसे जीवन की ऐसी कक्षा पर पहुंचा जहां मुझे हर समय, संजोग, संयोग, परिस्थिति, विचार, आचार, राग, व्यवहार समझ में आने लगा 🙏

यह वैष्णव जन्म तो सभी के है

यह वैष्णव जन तो सभी है

जितना मैं जानता हूं इतना तो हर कोई जानते है 🙏

मैंने कहीं बार अपने आपको सोचा

मैंने कहीं बार कुटुंब से सोचा

मैंने कहीं बार समाज से सोचा

पर

वैष्णव का अर्थ और वैष्णव का धर्म कहीं नहीं जाना 🙏

शास्त्रों में पढ़ा

प्रवचन में सुना

पर असंगत 🙏

सोचता रहा, पूछता रहा पर केवल कहीं सीमित धारी 🙏

तब ऐसा लगा

" सकल लोक मां सहु ने वंदन 🙏 "

वैष्णव खुद को ही संवरना, खुद को ही जगाना, खुद को ही जानना, ख़ुद में ही पाना और खुद में ही समाना 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा राधा!   राधा राधा! "

राधा का सुमिरन आनंद आनंद बिखराएं

राधा का मनन महक महक बिखराएं

राधा हमारी रानी! राधा हमारी बानी!

" राधा राधा! राधा राधा! "

" राधा राधा!   राधा राधा! "

राधा का दर्शन रंग रंग उड़ाएं

राधा का अर्चन संग संग खेलाएं

राधा हमारी प्यारी! राधा हमारी दुलारी!

" राधा राधा!   राधा राधा! "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राधे " 🌷🙏🌷

जब भी कोई जाओ वृंदावन

मेरा संदेश सुना देना

जगत जगत ब्रह्मांड ब्रह्मांड मैं घुमु

वृंदावन रज मैं न छू पाया

एक एक रज का एक एक स्पर्श

मेरे दिल को न भूल पाया

जहां भी जाऊं जहां भी छूऊं

वृंदावन वृंदावन ही छू पाया

कोई रज पुकारें कान्हा

कोई रज पुकारें राधा राधा

रज के बिन मैं नहीं कान्हा

बिन रज के मैं नहीं माधवा

रज से ही हूं मैं गोविंदा

रज से ही हूं मैं गोपाला

जहां मेरा प्रियतम वहीं है रज

जहां मेरा प्रेम वहीं है रज

जब भी कोई जाओ वृंदावन

मेरा संदेश सुना देना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राम "

राम अर्थात सेवक

राम अर्थात साथ

राम अर्थात त्याग

राम अर्थात नि:संदेह

राम अर्थात न्याय

राम अर्थात वंदन

राम अर्थात प्रणाम

राम अर्थात दास

राम अर्थात संस्कार

राम अर्थात विवेक

राम अर्थात विनय

राम अर्थात समानता

राम अर्थात संवेदना

राम अर्थात विद्यार्थी

राम अर्थात पुरुषार्थ

राम अर्थात समर्पण

राम अर्थात मित्र

राम अर्थात भाई

राम अर्थात पति

राम अर्थात पुत्र

राम अर्थात सत्य 🌷🙏🌷

राम पधारे हममें - राम पधारे हमसे 🙏

राम पधारे हर एक में - राम पधारे हर एक से 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मर के निकलना था सांवरिया के घर

जीते जी निकलना पड़ा यह संसार के द्वार "

कैसा अभागे है हम

जनम जनम बार बार पायो

हर बार जीते जी मर कर निकले संसार के द्वार

कितना जनम! कितने जन्म!

कब निकलुंगा सांवरिया के द्वार?

हर कोई रोएं बिन मेरे

न कोई रोएं सांवरिया बिन

कैसा अभागा जगत मेरा

जो मैं सदा भटकुं बिन सांवरिया

थामलुं यह घड़ी प्रियतम सांवरिया की

जो घड़ी घड़ी सांवरिया पास आएं

हाथ पकड़ लिया ऐसा श्यामा!

अब मरुं तो सांवरिया के ही द्वार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज हमारा मन, तन, नैन और जीवन केवल अर्थोपार्जन और अर्थोपार्जी है 🙏
हम कोई भी तुलना करते है तो अर्थोपार्जी से ही करते है, न कोई वैज्ञानिक, न कोई तकनीक, न कोई शिक्षात्मक, न कोई योग्यिक माध्यम से करते है 🙏
कुटुंब - अर्थोपार्जी
समाज - अर्थोपार्जी
व्यवसाय - अर्थोपार्जी
मित्रता - अर्थोपार्जी
विद्वत्ता - अर्थोपार्जी
धर्म - अर्थोपार्जी
वर्ण - अर्थोपार्जी
जीना - अर्थोपार्जी
मरना - अर्थोपार्जी
प्रसंग - अर्थोपार्जी
व्यवहार - अर्थोपार्जी
स्वाभाविक है कि हर कुछ अर्थोपार्जी ही होता है 🙏
इसलिए -
कुटुंब बिखराया
समाज भटकाया
धर्म छूटाया
संस्कार घुंटाया
जो भी हो अर्थोपार्जन से 🙏
हम अशांत
हम डरपोक
हम रोगी
हम असंतोषी
हम असंगति
हम निराशावादी
हम एकलवादी
हम मायावी
हम संदेही
हम अपराधी
हम दोषी
हम ढोंगी
हम अहंकारी
हम निराधार
हम निराधिकारी
हम स्वार्थी हो गये 🙏
जो भी देखें अकेला, अकेला, अकेला 🙏
है रास्ता 👇 अनोखा और उत्तम रास्ता
क्रमशः
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

श्री श्रीनाथजी आपके शरण में रहूं 🙏

श्री श्रीयमुनाजी आपके स्मरण में रहूं 🙏

श्री श्रीवल्लभाचार्यजी आपके चरण में रहूं 🙏

आपके शरण में, आपके शरण में,

आपके शरण में, आपके शरण में,

आपके शरण से मैं पाऊं गोलोकधाम

श्री श्रीनाथजी आपके शरण में रहूं 🙏

आपके स्मरण में, आपके स्मरण में,

आपके स्मरण में, आपके स्मरण में,

आपके स्मरण में मैं पाऊं तनुनवत्व प्रेम

श्री श्रीयमुनाजी आपके स्मरण में रहूं 🙏

आपके चरण में, आपके चरण में,

आपके चरण में, आपके चरण में,

आपके चरणों में मैं पाऊं पुष्टि सृष्टि नाम

श्री श्रीवल्लभाचार्यजी आपके चरण में रहूं 🙏

श्री श्रीनाथजी 🙏 श्री श्रीयमुनाजी 🙏

श्री श्रीयमुनाजी 🙏 श्री श्रीवल्लभाचार्यजी 🙏

श्री श्रीवल्लभाचार्यजी 🙏 श्री श्रीनाथजी 🙏

श्री श्रीनाथजी 🙏 श्री श्रीवल्लभाचार्यजी 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहहह अनगिनत मन!

अनगिनत विचार!

अनगिनत अर्थ!

अनगिनत समझ!

अनगिनत स्वीकार!

अनगिनत विमर्श!

अनगिनत समय!

अनगिनत संजोग!

अनगिनत परिस्थिति!

अनगिनत राह!

अनगिनत चाह!

अनगिनत द्रष्टि!

अनगिनत द्रष्टांत!

अनगिनत धारणा!

सच! हम कैसे जीएं है! 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरा श्री नाथ तुम्हें देख कर हंसे

मेरा श्री वल्लभ तुम्हें देख कर हंसे

मंगला के दर्शन तुम नित नित जाओं

मंगल आरती मंगल मंगल झांकी पाओं

श्री नाथ नयन से नयन मिलाओं

श्री नाथ को अपने ह्रदय में बिराजाओं

श्री नाथ मुखड़ा मलकें

मेरा श्री नाथ तुम्हें देख कर हंसे 🌷

षोडश ग्रंथ से पुष्टि उर्जा जगाओं

श्री गिरिराज मुखारविंद परिक्रमा द्याओं

श्री यमुना जल की झारी भराओं

श्री अष्टसखाएं कीर्तन सुनाओं

श्री वल्लभ आनंद भये

मेरा श्री वल्लभ तुम्हें देख कर हंसे 🌷

मेरा श्री नाथ तुम्हें देख कर हंसे 🌷

मेरा श्री वल्लभ तुम्हें देख कर हंसे 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🛕🌷

बस! निकल जाएं!

कैसा है यह देश!

कैसे है यह देश वासियों!

कैसे है जीवन जीना!

कैसे है रहना!

कैसे है बसना!

कैसे है निभाना!

बस! निकल जाएं 🙈

कुटुंब में रहा तो हर कोई आयोजन करे मैं उससे आगे निकल जाऊं 🙈

पाठशाला में पढ़ने गया तो हर कोई सिखाएं मैं उससे आगे निकल जाऊं 🙈

स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने गया तो हर कोई माता-पिता कहते रहे मैं उससे आगे निकल जाऊं 🙈

स्नातक होने विद्यालय गया तो हर कोई अपने आप ऐसे हो की मैं उससे आगे निकल जाऊं 🙈

समाज के प्रसंग और उत्सव में गया तो हर कोई हरीफाई करें मैं उससे आगे निकल जाऊं 🙈

नौकरी या धंधा का व्यवसाय करने गया तो हर कोई में - मैं श्रेष्ठ और मैं ही आगे निकलूं 🙈

हर योग-संजोग में मैं कुछ सूचन करुं तो हर कोई सिखाएं मैं कभी किसी से पीछे नहीं जाऊं 🙈

जो भी कुछ व्यवहार में मैं जाऊं तो हर कोई जो कुछ भी करें तो मैं उससे अपना ही बना लूं 🙈

हर रीत, बात, भात, और क्रिया, मुझे उन्हें हराना है 🙈

बस! आगे निकलना है 🙈

चाहें कुछ भी करें बस उनसे आगे निकलूं 🙈

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 💐🙈💐

सांज ढल रही है

बादल रंग भर रहे है

आंगन झाड़ू लगाती

धूल बिखरती

बार बार रुख़ करती अपलक नैना

बस! अभी आयेंगे श्याम

काम रहने दो मेरा मन 🌷

मटकी पड़ी उधर इधर

माखन गिरा बिखर बिखर

चोली पायजामा ढंग अढंग

कंगना कुंडल करें संकेत गरज

बार बार टकोरे जाग जाग

बस! अभी आयेंगे श्याम

काम रहने दो मेरा तन 🌹

आंखों में नहीं काजल लगाया

बालों को नहीं दोरी से बांधा

मुखड़े को नहीं अंगिया पोंछा

गले को नहीं मालाओं से सजाया

बार बार आंचल चुभाएं

बस! अभी आयेंगे श्याम

शृंगार रहने दो मेरा प्रेम 🌹

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक व्यक्ति हर बार शिस्त, नियम और सैद्धांतिक रहे तो अवश्य उनके साथ रहने वाला शिस्त, नियम और सैद्धांतिक रहे 🙏

एक व्यक्ति हर बार विश्वास, निखालस और योग्यता में रहे तो अवश्य उनके साथ रहने वाला विश्वास, निखालस और योग्यता में रहे 🙏

हर व्यक्ति हर बार प्रमाणिक, बिना शर्त, और निःस्वार्थ से रहे तो अवश्य उनके साथ रहने वाला प्रमाणिक, बिना शर्त और निःस्वार्थ से रहे 🙏

सच! कितनी अदभुत, अनोखी और उत्तम दुनिया है कि यहां जो सत्य, बिना संशय और आनंद से रहे तो अवश्य हर कोई को आनंद आनंद और आनंद ही मिलता है 🙏

हे जगत जन! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा राधा हमारी दुलारी राधा

कान्हा कान्हा हमारे दुलारे कान्हा

राधा राधा राधा हमारी द्रष्टि राधा

कान्हा कान्हा कान्हा हमारे नैनों कान्हा

राधा राधा राधा हमारी सृष्टि राधा

कान्हा कान्हा कान्हा हमारे ब्रह्मांड कान्हा

राधा राधा राधा हमारी कृति राधा

कान्हा कान्हा कान्हा हमारे पुरुषार्थ कान्हा

राधा राधा राधा हमारी प्रियतम राधा

कान्हा कान्हा कान्हा हमारे प्रिये कान्हा

सांस सांस पर " राम " नाम
राम नाम सत्य है 🙏

संकल्प संकल्प " राम " नाम
राम संस्कार सत्य है 🙏

विचार विचार पर " राम " नाम
राम चरित्र सत्य है 🙏

कदम कदम पर " राम " नाम
राम पुरुषार्थ सत्य है 🙏

क्रिया क्रिया पर " राम " नाम
राम विजय सत्य है 🙏

योग योग पर " राम " नाम
राम संयोग सत्य है 🙏

द्रष्टि द्रष्टि पर " राम " नाम
राम करुणा सत्य है 🙏

स्वर स्वर पर " राम " नाम
राम अक्षर ब्रह्म है 🙏

आत्मा ज्योत पर " राम " नाम
राम परब्रह्म परमात्मा है 🙏

राम राम राम राम
राम राम राम राम
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

" शाम को भूला श्याम का वादा "

हर शाम बस यही पंक्ति, यही गूंज और यही शब्द अपने कर्ण पटल पर टकराते है

जैसे जैसे समय बीतता जाता है

जैसे जैसे उम्र बढ़ती जाती है

जैसे जैसे जीवन गुजरता जाता है

बस हर शाम

" शाम को भूला श्याम का वादा "

हां! हमने जब जन्म लिया तब का यह वादा

हे श्याम! हर शाम मैं तुम्हें अवश्य मिलूं

पर शाम को थके हुए,

जीवन चक्र में चलते हुए,

दिन पर दिन काटते

संसार के विष चक्र में फंसे हुए

काटते काटते, गुज़रते गुज़रते यह वादा तोड़ते रहते है 🙏

" शाम को भूला श्याम का वादा "

तो श्याम कैसे आएं हमरे पास

श्याम की लीला तो श्याम से जुड़ती ही है

पर

हमारी संसार लीला ही ऐसी है जो आनंदमय है, जो प्रेममय है, जो सदा मधुर है उन्हें भूल जाते है और विषैले, दरिद्रे, और स्वार्थी विषयों में मुग्ध और मस्त 🙏

तो हम हर कोई सत्य और प्रेम का वादा भूल ही जाते है 🙏

" शाम को भूला श्याम का वादा "

तो हमारा जीना कैसा!

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग का स्वीकार किया 🙏

और

बार बार कहते रहते है

" यह मर्यादा में है - यह पुष्टि में है 🙏

कैसे?

महाराज ने कहा 🙏

कोई वैष्णव ने कहा 🙏

कहीं ओर किसीने लिखा 🙏

ग़लत 🙏 ग़लत 🙏 ग़लत 🙏

श्री वल्लभाचार्यजी कहते है

" कृषणाधीना तु मर्यादा - स्वाधीना पुष्टिरुच्यते "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यह समझना और अपने में जांच करना अति आवश्यक है 🙏

" मर्यादा - पुष्टि " का अर्थ में हम अपने आपको क्या से क्या कर देते है 🙏

हम अपना जीवन को जो भी समझ कर यापन कर रहे होते है 🙏

और आखिर हमारी गति! 🙏

🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" सेवा " हम हमसे करें या महाराज कहें ऐसा करें?

अगर हमसे करें तो?

अगर हम महाराज से कहें ऐसे करें तो?

हम हमारे घर के ठाकुरजी की सेवा कैसे करते है वह तो खुद ही जाने 🙏

जो हमसे करें सेवा वही " पुष्टि सेवा " है

जो महाराज से कहें सेवा करें वह पुष्टि सेवा नहीं है 🙏

आज्ञा - कानी आदि से हम मर्यादित हो जाते है 🙏

सोच लो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पधारोगे कब मेरे आंगन श्री वल्लभ

पधारोगे कब मेरे आंगन

मेरे मन को मैंने विशुद्ध कियो है

श्री सुबोधिनी की ठोर

मन निर्मल निर्मोही सो धर

नहीं संशय कहीं एक शोर

पधारोगे कब मेरे आंगन श्री वल्लभ

पधारोगे कब मेरे आंगन

श्री वल्लभ स्मरण धरण वरण में

श्री यमुनाजी की होर

नयन पवित्र वदन नि:कलंक धोर

एक एक स्पंदन विरह लगाएं

पधारोगे कब मेरे आंगन श्री वल्लभ

पधारोगे कब मेरे आंगन

पधारोगे कब?

पधारोगे कब मेरे आंगन श्री वल्लभ

पधारोगे कब मेरे आंगन

पधारोगे कब

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" कर्तव्ये हि विषये एवं, अनेवम्, अन्यथा कर्तुं शक्यते कर्म न हि सिद्धे विषये "

अदभुत! हे आदि गुरु शंकराचार्यजी 🙏

आपने परम सत्य का ज्ञान प्रदान किया है 🙏

मानव की हर लाक्षणिकता में विषय सूक्ष्मता से प्रवेश कर ही जाता है। यही विषय को पहचानने का सही शिक्षा आपने प्रदान की 🙏

आपको प्रणाम 🙏

यह ज्ञान की अनोखी सूक्ष्मता से मानव अधोगति ही पा सकता है - जनम जनम भटकता है - सदा दु:खो का आवरणों में लपेटा ही रहता है - अपना मन और शरीर को कष्टों भूषण से अलंकृत करता रहता है और सदा मृत्यु शैय्या पर लेटे भोगता रहता है 🙏

कहीं जन्मों से यह ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहा और आज पाया 🙏

आपको प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

" हमारे घर राम आये है 🙏 "
समझना और संभलना 🙏
" हमारे घर राम आये है 🙏 "
ऐसा कौन कह सकता है?
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " के जैसा गुण हों 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " के साथ जीना चाहता है 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " के कदम पर चलने वाले हों 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " कहे ऐसा अनुसार करने वाले हों 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " का धर्म पालनकार हों 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " राज्य स्वीकार करने वाले हों 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो अवश्य " राम " की मर्यादा में रहने वाले हों 🙏
ऐसा वही ही कह सकता है
जो " रघु कुल रीत सदा चली आई
प्राण जाएं पर वचन न जाएं "
सोच लो हम " राम " के काबिल है?
हां!
तो अवश्य कह सकते है
" हमारे घर राम आये है 🙏"
🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹
" Vibrant Pushti "
" जय श्री राम " 🌹🙏🌹

जनम जनम से मैं जी रहा हूं
हे इश्वर! आज भी मैं तुझसे बेखबर हूं
ऐसा क्यूं? क्या तेरा मुझे एहसास नहीं?

मैं जीवन जीता जीता चल बसता हूं
हे इश्वर! आज भी मैं तुझे ढूंढ रहा हूं
ऐसा क्यूं? क्या तेरा मुझे अनुभव नहीं?

सागर पर्वत आकाश जंगल धरती भटका
हे इश्वर! तु यही कहीं तु कहीं यही
ऐसा क्यूं? क्या तुमने मुझे संभाला नहीं?

घड़ी घड़ी क़दम क़दम साथ ही साथ
हे इश्वर! न कभी तु अकेला न कभी ठुकराया
ऐसा क्यूं? सत्य क्यूं मुझमें नहीं जागा?

क्यूंकि
न तुझे तेरे खुद पर विश्वास
न तुझे मेरे साथ का विश्वास
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
तेरी समझ में तु हीं सबकुछ
मुझ बिन नहीं कोई पहचान
सोचा तुझे मैं बनाऊं
पर
तु खुद ही अपने आप ही समर्थ
तो कैसे हो अपनी एक रंजन
चाहे तु कितना जन्म ले
चाहे तु कितना भटक ले
तु नहीं तु नहीं तु नहीं मुझे पायेगा
तु नहीं तु नहीं तु नहीं मुझे पहचानेगा
जीवन का रंग ही ऐसा
तु दूर दूर और दूर
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
क्रमशः
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा के रंग में रंगायो श्री श्याम सुंदर

राधा के रंग में रंगायो श्री श्याम सुंदर

रंग रंग रंग से संग संग राधा

रंग रंग रंग से संग संग राधा

ऐसो रास रचायो श्री श्याम सुंदर

राधा के रंग में रंगायो श्री श्याम सुंदर

अंग अंग अंग से रंग रंग राधा

अंग अंग अंग से रंग रंग राधा

ऐसो प्रेम जगायो श्री श्याम सुंदर

राधा के रंग में रंगायो श्री श्याम सुंदर

घड़ी घड़ी राधा घट घट राधा

घड़ी घड़ी राधा घट घट राधा

ऐसो वरण कियो श्री श्याम सुंदर

राधा के रंग में रंगायो श्री श्याम सुंदर

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरी हर घड़ी ओर घड़ी घड़ी देखने वाले

मेरे हर वर्ष की ओर वर्ष गांठ संवरने वाले

मेरे हर जीवन उम्र की ओर निहारने वाले

हे श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

हे श्री यमुनाजी! 🌷🙏🌷

हे श्री श्रीनाथजी! 🌷🙏🌷

आपको क्षण क्षण नमन 🙏 वंदन 🙏 प्रणाम 🙏

याचु छु तव् शरण चरण और आचरण 🙏

व्यक्ति से वैष्णव और सखा और गोपी बनु

मुझे सदा वास रहे वृंदावन नीज रज धाम

पुष्टि साहित्य से मैं संस्कार पाऊं

कालिंदी कृपा से पुष्टि रस पाऊं

श्री नाथ स्मरण से नित्य लीला पाऊं

याचु भक्त प्रेम पुरुषार्थ स्पर्श पंकज 🙏

एक एक पुष्टि स्पंदन किरण से सूर्य में समाऊं

जगत गति से सदा तेरा सानिध्य पाऊं

एक एक आत्म को " जय श्री कृष्ण "

सदा यही द्रष्टि सृष्टि वृष्टि ध्याऊं 🙏

🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹

पुष्टि स्पंदन स्पर्शी साथीओं को मेरा प्रणाम 🙏

🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

" राम कुटुंब "

" राम राज्य " बार बार सुना पर " राम कुटुंब " पहली बार सुनें

" राम कुटुंब " उत्तम और श्रेष्ठ है जो हर एक व्यक्ति को जानना, समझना और अपनाना चाहिए 🙏 अवश्य हमारी प्राथमिक और मूल जवाबदारी है 🙏

" राम कुटुंब "

संत श्री तुलसीदासजी ने कहा है

" अल्प मृत्यु कब कियो नहीं पीरा "

" सब सुंदर सब बिरुज सरीरा "

" नहीं दरिद्र न कोऊ दुःखी न दीना "

" नहीं कोई अबुध नहीं लच्छिन हीना "

हम सदा तंदुरुस्त, निरोगी और आयुष्मान हो

जिससे अल्प मृत्यु कभी न हो 🙏

हम सदा सुंदर और तेजोमय हो 🙏

हम सदा तवंगर और सुखी हो 🙏

हम सदा संस्कारी शिक्षित और लक्षणी हो 🙏

हम ने कभी अकेले में चिंतन किया है?

हम क्या है?

बस जन्म पाया और हल्ला मचाया 🙏

संसार को कलह और कलंकित करने वाले 🙏

अपने आपको कभी जगाया है?

" राम कुटुंब " तो पधारे राम हमारे घर 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" रोग भोग और दोग "
रोग - हममें कब आते है?
जब हम अन्न सही नहीं आरोगते है 👉
हम अछूत अन्न खाते है 👉
हम अभक्ष्य अन्न खाते है 👉
हम बिना समय और समझ अन्न खाते है 👉
मूफ्त मिला है 👉
हम कुछ भी खाते है 👉
रोग - रोगी - अपमृत्योगी - असाध्योगी होते है 🙏
चाहे कितने पैसा दार हो - धन एकठ्ठी हो 🙏
आधा जीवन रोगी - आधा जीवन असंगति
🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹
भोगी - हम कब होते है?
संस्कार का व्यभिचार करें 🙏
अहंकार का राग करें 🙏
दूराचार का व्यापार करें 🙏
आत्मीय जनों का अविश्वास करें 🙏
🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹
दोगी - हम क्यूं हुए?
दगाखोर - दंगा बाज - ढोंगी 👉
बात बात पर झुठ 🙏
व्यवहार व्यवहार पर भोंठ 🙏
शिक्षा में ठोंठ 🙏
रमण में भोग 🙏
नयनों में रोग 🙏
होंठों पर धोक 🙏
कानों पर झोंक 🙏
🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

गहरी बात है पुष्टिमार्ग के सिद्धांत की
" मंगलाचरण "
" चिन्ता-सन्तान-हन्तारो यत्पादाम्बुज-रेणवः।
स्वीयानां तान् निजाचार्यन् प्रणमामि मुहुर्मुहुः।। "
यह प्रथम स्त्रोत हम पढ़ते है 🙏
यह प्रथम स्त्रोत हम गाते है 🙏
यह प्रथम स्त्रोत का हम पठन करते है 🙏
कहींओ ने कहीं बार पढ़ें
कहींओ ने कहीं बार गाएं
कहींओ ने कहीं बार पठन किएं
और
कहींओ ने कहीं बार विश्लेषण किया 🙏
पढ़ते रहे है
गाते रहे है
पठन करते रहे है
और
सुनते रहे है
समझते रहे है
और
अपने आपको अपनाते रहे है 🙏
संस्कृत के कोई वेदाचार्य
संस्कृत के कोई स्नातक
संस्कृत के कोई पंडित
संस्कृत के कोई साहित्यकार
संस्कृत के कोई टिप्पणीकार
संस्कृत के कोई टिकाकार
ऐसा कह सकते है कि
" यह प्रथम पंक्ति ' मंगलाचरण ' अनुसंधान क्यूं? "
" यह प्रथम पंक्ति ' मंगलाचरण ' ऐसी सामर्थ्यता क्यूं? "
" यह प्रथम पंक्ति ' मंगलाचरण ' कि योग्यता में क्यूं? "
पुष्टिमार्ग सिद्धांत अनुसार यह ग़लत है 🙏
कैसा भी विचार-विमर्श करें - यह अयोग्य है 🙏
कैसा भी विश्लेषण करें - यह सही नहीं है 🙏
जो सर्वथा श्री वल्लभाचार्य के संगत है वह यह नहीं कह सकते है 🙏
" चिन्ता-सन्तान-हन्तारो यत्पादाम्बुज-रेणवः।
स्वीयानां तान् निजाचार्यन् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।। "
कहीं भी इसका अर्थ करलें 🙏
किसीसे भी यह अर्थ करवालें 🙏
इसकी अर्थ टिका में कोई अलग ही समझ है 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हर जीव जीवन अनोखा
हर जन्म जगत अनोखा
हर जीव कोई जीव से जुड़े
एक अनोखा संसार रचाएं
एक अनोखा जगत जगाएं
एक अनोखा ब्रह्मांड भ्रमणाएं
जीव जीवन की अनोखी गाथा
जन्म जगत की अनोखी बाधा
कुछ तो है अनोखा
जीव जनम जनम जीएं
संसार रंग रंग बदलाएं
जगत ज़र्रा ज़र्रा घुमाएं
ब्रह्मांड ब्रह्म ब्रह्म भूमाएं
एक आत्मा एक परमात्मा
चारों ओर चक्कराएं
शांति मुक्ति प्रेम युक्ति
कब कैसे एक एक समाएं
जीव जीवन जगत की जंजाल
कब कैसे कौन उकेल पाएं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
सच! कोई एक सांस उलझाएं
सच! कोई एक जन्म झुंझलाएं
सच! कोई एक अपेक्षा भटकाएं
सच! कोई एक भूल भूलभूलाएं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
चलो एक बार फिर दिल लहराएं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भगवान के प्राणों का प्राण भक्त है
केवल भक्त के प्राण भगवान नहीं होते "
ऐसा चरित्र जो आध्यात्मिक, समर्पण, निःस्वार्थ और निर्भय वही भगवदीय है, भक्त है, संत है 🙏
ऐसे आत्मीयजन " श्री कुंभनदास " जो केवल श्री वल्लभाचार्य के अनुयायी और श्री श्रीनाथजी के प्राण 🙏
न कभी धन की चाहत
न कभी प्रतिष्ठा की चाहत
न कभी मांगने की प्यास
न कभी भविष्य की आश
न कभी संसार की सांस
न कभी अन्न की आहत
बस केवल एक ही शहादत - श्री नाथजी 🙏
श्री प्रभु खेलने आवैं
श्री प्रभु आरोगने आवें
श्री प्रभु आराधने आवैं
श्री प्रभु लुटाने आवें
श्री प्रभु हारने आवैं
श्री प्रभु सोने आवें
एक तुटी फुटी झोंपड़ी
एक फटी पहनी धोती
कब भोजन किया न याद
अपनी हालत की न फरियाद
कैसे व्यक्ति! 🌷🙏🌷
कभी मन से ऐसी कल्पना करें
कभी होंठों से ऐसी बातें करें
कभी ख्याल से ऐसा विचार करें
कभी ख्वाब में ऐसा ध्यान धरें
नहीं 🙏 नहीं 🙏 नहीं 🙏 और नहीं 🙏
तो भी इन्होंने जीया
तो भी इन्होंने सांधा
तो भी इन्होंने बांधा
तो भी इन्होंने समाया 🙏
पुष्टिमार्ग का मूल सिद्धांत है 🙏
" भगवान के प्राण भक्त " 🙏
हम याचक!
हम भक्षक! 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हे वल्लभ! मुझे शरण दें 🙏
हे श्री श्रीनाथजी मुझे चरण दें 🙏
हे श्री गोवर्धन मुझे वरण दें 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राम - राम " हे नैन तु गाएं?
पूछा आत्मा ने
नहीं नहीं! मुझे किसीने शिखाया 🙏
" राम - राम " हे मन तु बोलें?
पूछा आत्मा ने
नहीं नहीं! मुझे किसीने मोड़ा 🙏
" राम - राम " हे तन तु दौड़े?
पूछा आत्मा ने
नहीं नहीं! मुझे किसीने समझाया 🙏
" राम - राम " हे धन तु लुटें?
पूछा आत्मा ने
नहीं नहीं! मुझे किसीने छोड़ा 🙏
" राम - राम " हे जीवन तु चलें?
पूछा आत्मा ने
नहीं नहीं! मुझे किसीने चलाया 🙏
सोचें आत्मा किसने शिखाया? मोड़ा? समझाया? छोड़ा? चलाया?
कोई कहें
माता-पिता ने
कोई कहें
गुरु - आचार्य ने
कोई कहें
धर्म - कर्म ने
कोई कहें
जगत - संसार ने
आत्मा सोचनें लगा
मैंने यह नैन में ख़ुद को द्रष्टि दी
मैंने यह मन में ख़ुद का तेज़ दिया
मैंने यह तन में ख़ुद का पुरुषार्थ सिंचा
मैंने यह धन में ख़ुद कि शुद्धता निरुपी
मैंने यह जीवन में ख़ुद कि योग्यता सिद्धि
तब यह नैन - मन - तन - धन - जीवन
" राम - राम " करें 🙏
हे परमात्मा! तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम 🙏
तुने मुझे जन्म दिया - तुने ही मुझे तुझमें समेटा 🙏
" Vibrant Pushti '
" राम - राम " 🌷🙏🌷

फररररर फररररर ओ ओ ओ ओ ओ

फागुन फोरमता आया हे सखी!

फागुन फोरमता आया ओ ओ ओ ओ

फागुन फोरमता आया हे री सखी!

फागुन फोरमता आया!

मंद मंद महकाता आया हे सखी!

मंद मंद महकाता आया!

फागुन महकाता आया हे सखी!

फागुन महकाता आया!

✾✾✾✾✾✾✾✾✾

सररररर सररररर ओ ओ ओ ओ ओ

सररररर सररररर सररररर सररररर

सररररर सरकाता आया हे सखी!

सररररर सरकाता आया!

सररररर सरकाता आया हे सखी!

सररररर सरकाता आया!

सररररर सररररर सररररर री सखी!

फागुन सरकाता आया!

फागुन सरकाता आया हे री सखी!

फागुन सरकाता आया!

✾✾✾✾✾✾✾✾✾

एक बार किसीने पूछा कि

" लोग बार बार बार बार एक ही टाइप के दर्शन करवाते है 🙇 " ऐसा क्यूं?

क्यूंकि जैसे एक बार एक मंत्र का ग्रहण हमें सिद्धि देते है ऐसे एक ही टाइप के दर्शन हमें साक्षात्कार करवा सकते है 🙇

हां! पर इनमें यह बात भी निश्चित और प्रमाणित है कि जो यह दर्शन करवाते है वह भी सिद्ध होने चाहिए 🙇

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙇🌷

मेरे श्रीनाथजी तुम्हारे श्रीनाथजी

हमरे श्रीनाथजी सबके श्रीनाथजी

श्रीनाथजी के मंगल दर्शन भायें

श्रीनाथजी के मुखारविंद में चित्त दौड़े

श्रीनाथजी के चरणों में स्व समेटाएं

मेरे श्रीनाथजी तुम्हारे श्रीनाथजी

हमरे श्रीनाथजी सबके श्रीनाथजी

श्रीनाथजी हमरी सेवा में आएं

श्रीनाथजी मनभावन शृंगार सजाएं

श्रीनाथजी हमसे रास रचाएं

मेरे श्रीनाथजी तुम्हारे श्रीनाथजी

हमरे श्रीनाथजी सबके श्रीनाथजी

श्रीनाथजी हमें नाथद्वारा बुलाएं

श्रीनाथजी हाथ ऊंचे साद पुकारें

श्रीनाथजी आठो शमां साथ निभाएं

मेरे श्रीनाथजी तुम्हारे श्रीनाथजी

हमरे श्रीनाथजी सबके श्रीनाथजी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
अदभुत 🙏
हमने कहीं बार श्री वल्लभाचार्यजी के चित्रजी का दर्शन किया 🙏
हमने कहीं बार श्री गुंसाईजी के चित्रजी के दर्शन किया 🙏
हमने कहीं बार बार अष्टसखाओं के चित्रजी के दर्शन किया 🙏
बिलकुल अनोखा - अलौकिक और अविस्मरणीय 🌷
केवल अपने में मग्न
-न तन का शृंगार
-न मन का विहार
-न धन का प्रसार
स्व और स्व के शिष्य 🙏
न तन का आचार
न मन का संचार
न धन का व्यापार
स्व और स्व के अनुयायी 🙏
-न रुप का गुलाम
-न धूप का मुकाम
-न छूप का विकाम
स्व और स्वरुप का रंग 🙏
न कोई अपेक्षा
न कोई तितिक्षा
न कोई समीक्षा
केवल
अविद्या मिटाना
अंधकार मिटाना
अहंकार मिटाना
अनोखा ठिकाना
अदभुत संवेदना
अलौकिक सर्जना
हे वल्लभ!
आओगे कब मेरी ओर श्री वल्लभ
आओगे कब मेरी ओर
घड़ी घड़ी तुम्हें स्मरण करुं
पड़ी पड़ी तुम्हें नमन करुं
आओगे कब मेरी ओर 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पहले भी इन्सान मरते थे और मार कर मौत घे घाट उतारते थे, मारते मरते कैसे कैसे जीते थे - निर्मम हत्या, निर्मम दंड, निर्मम स्थिति

चाहे रोग नहीं थे, वाइरस नहीं थे पर मरते तो थे। आज रोग है - वाइरस है - अकस्मात है और अयोग्य अशुद्ध अन्न तो है

जो मारते है - रोगीष्ट है और भूखमरा है।

चाहे कोई अलिप्त हो पर सारे बिन अंकुश - असुरक्षित - अंधे और बिन संस्कारशिक्षित।

पूर्वजों वैदिक, पूर्वजों निरोगी तो अवश्य अति शिक्षित और बिन रोगी ही हो सकते है। ऐसा क्यूं?

न कभी धन को देखा

न कभी तन को देखा

केवल मन स्थिर - संतोषी और निर्लेपी।

आज

हम इतने शिक्षित कि कोई उपाय ही नहीं खोज पातें - बस घसीटते घसीटते चलते बसे - चलते बसे - चलते बसे

न कोई उपहास - न कोई आश

न कोई आह - न कोई राह

बस चलते - चलाते - चलते

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

सुने सुने कितना सुने

वही चरित्र - वही नाम - वही स्थली और वही सत्य सिद्धांत

जो बार बार - हर बार समझ समझ कर इतना समझाया - इतना समाया - इतना पठन किया कि हम भी चौराहे चौटें यही एक दूसरे को सुनाते सुनाते खुद को अष्टसखा या भक्त समझने लगे 😭

पैसा, दिखावा, सस्ता सन्मान और हलका सुख हमारा जीवन बना दिया 😭

पैसा से पहचान

पठन से ज्ञानी

गाड़ी से धनवान

मूर्खों की टोली के साथ व्यवहार

हम समाज के उत्तम व्यक्ति मानने लगे

एक मूर्ख ने दूसरे मूर्ख को चाय पिलाया या नास्ता करवाया और खुद को अभिमान से समझे श्रेष्ठ 👈

नहीं नहीं! 🌷😭🌷 नहीं नहीं 😭

हम अपना जन्म जीवन समय शिक्षा बर्बाद कर रहे है 😭

हम तो कितने भाग्यशाली है कि हमें यह ऋषियों कि तपोभूमि पर जन्म धरा है और हम क्या कर रहे है?

🌷😭🌷😭🌷😭🌷😭🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" शिक्षक " " Teacher "

कभी सुना है यह शब्द?

अरे कमाल करते हो भाई!

यह तो हररोज की दिनचर्या का शब्द है

हमें पढ़ाते है

या

हमारे पुत्र - पुत्री को पढ़ाते हैं

या

हमारे पौत्र - पौत्री को पढ़ाते है 🙏

ओहहह!

क्या यह सत्य है?

अरे कमाल करते हो!

इनके अलावा हम कैसे शिक्षित हुएं!

घड़ी घड़ी हम पढ़ते है तो शिक्षक तो अवश्य है ही - आवश्यकता है ही 🙏

अरे फिर कमाल करते हो!

बिन शिक्षक हम कैसे जीएं?

अपने आपको पूछले!

हमने खुदने धीरे धीरे शिक्षक को मार डाला 🙏

आज कोई शिक्षक के लिए योग्य नहीं, शिक्षित नहीं, समझ नहीं 🙏

हां!

पाठशाला में शिक्षक नहीं

विद्यालय में शिक्षक नहीं

विद्यापीठ में शिक्षक नहीं

ओहहह! तो हम पढ़ते कैसे है?

सोच लो 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं जी रहा हूं 🙏
आप जी रहे हो 🙏
हर कोई जी रहा है 🙏
पर हर एक का जीवन में तफावत क्यूं?
मन अलग
कर्म अलग
धर्म अलग
मान्यता अलग
स्वीकार अलग
जीवनी अलग
परंपरा अलग
विश्वास अलग
श्रद्धा अलग
अन्न अलग
रीति रिवाज अलग
जाति अलग
रहन-सहन अलग
भेद भरम अलग
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
इतना ही नहीं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
१. छूपा छूपी अलग
२. शिक्षा अलग
३. सरकारी नियम अलग
४. सामाजिक द्रष्टि अलग
५. भरण पोषण अलग
६. अर्थ व्यवस्था अलग
७. योजनाएं जीवन
८. दवा दारू अलग
९. भाषा अलग
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
गर्व से कहें ' हिंदु '
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
पर कभी साथ नहीं 🙏
स्वार्थ आया - सत्य गया 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री राम "
" जय श्री कृष्ण "

" राधा राधा " एक रटण

" राधा राधा " एक स्मरण

" राधा राधा " एक रमण

" राधा राधा " एक शरण

" राधा राधा " एक करण

" राधा राधा " एक वरण

" राधा राधा " एक मरण

" राधा राधा " एक भरण

" राधा राधा " एक चरण

" राधा राधा " एक धरण

" राधा राधा " एक तरण

" राधा राधा " एक हरण

" राधा राधा " एक घरण

" राधा राधा " एक रुण

" राधा राधा " एक कृण

" राधा राधा " एक भृण

" राधा राधा " एक गुण

" राधा राधा " एक लुण

" राधा राधा " एक तृण

" राधा राधा " एक पूर्ण

" राधा राधा राधा राधा राधा राधा "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा "

हे कृष्ण!
पंख होते तो उड़ आती रे रसिया ओ बालमा!
तुझे दिल का दाग़ दिखलातीं रे

जन्म से दाग
जन्मों से दाग

तु ही कहें कान्हा!

तुने जन्म लिया तुझ पर भी दाग

ओ रसिया बालमा!

भटक भटक कर भटक गया
हर स्पर्श से दाग़ लगा

रसिया ओ बालमा!

पढ़ाई करे तो दाग़
व्यवहार करे तो दाग़
सांस ले तो दाग़
कदम चले तो दाग़
तुझे दिल का दाग़ दिखलातीं रे!

प्रेम में दाग़
विरह में दाग़
छूने से दाग
सोचने से दाग़
रसिया ओ बालमा!
तुझे दिल का दाग़ दिखलातीं रे!
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
तु बुलालें कान्हा!
शायद तुझसे ही दाग़ लगे
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
रसिया ओ बालमा! 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक दर्शनार्थी हर रोज दर्शन में यह विनंती करे

मुझसे नज़र कब मिलाओगे श्री कृष्ण

मुझसे नज़र कब मिलाओगे

साथ में खड़ा दर्शनार्थी जोर जोर से हंसने लगा - और कहने लगा

अरे भैया! श्री कृष्ण तो केवल मेरी ओर ही देखते है तो तुम्हारी ओर कैसे देखेंगे!

यह सुनकर उनके साथ खड़ी हुई बहन बोले - अरे भाईओं! कैसी बातें करते हो - श्री प्रभु की कृपालु नज़र तो केवल मुझ उपर टिकी है - तो वह आप दोनों को कैसे नज़र दें!

कमाल हो गया! हर कोई दर्शनार्थी कहे श्री कृष्ण की नज़र मुझे देखती है तो ओर कहीं कैसे देखें!

जो दर्शनार्थी विनंती कर रहा था वह सहमा सहमा गया - क्यूंकि वह एकाग्रता से श्री कृष्ण का दर्शन करने अपने मन को स्थिर किया तो तुरंत ही वह गाने लगा

नज़र से नज़र एक हुई श्री कृष्ण

नज़र से नज़र एक हुई

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

આખરે નિયતિએ ટ્રિગર ખેંચ્યું...

દક્ષિણ આફ્રિકા ની રાજધાની *કેપ ટાઉન* એ વિશ્વનું પ્રથમ પાણી વિનાનું શહેર જાહેર કરવામાં આવ્યું છે કારણ કે તેની સરકારે *14 એપ્રિલ, 2023* પછી પાણી પુરું પાડવામાં અસમર્થતા દર્શાવી છે.

ત્યાં સ્નાન કરવાની મનાઈ છે.

10 લાખ લોકોના કનેક્શન કાપી નાખવાની તૈયારીઓ ચાલી રહી છે.

જે રીતે ભારતમાં પેટ્રોલ પંપ પર જઈને પેટ્રોલ ખરીદવામાં આવે છે, તેવી જ રીતે કેપટાઉનમાં પણ પાણીના ટેન્કર હશે જ્યાં 25 લીટર પાણી મળશે, વધુ પાણી માંગનારા કે પાણીની લૂંટ ચલાવનારાઓ સામે કાર્યવાહી કરવા પોલીસ અને સેનાના જવાનોને તૈનાત કરવામાં આવ્યા છે,

દુનિયાની આ દુ:ખદ યાત્રા આખરે કોઈને પણ આવશે, માટે પાણીનો સંયમપૂર્વક ઉપયોગ કરો.

પાણીનો બગાડ કરવાનું બંધ કરો અમે પણ જોયું છે કે લાતુર (મહારાષ્ટ્ર)માં રેલ દ્વારા પાણી મોકલવામાં આવે છે.

વિશ્વનું માત્ર 2.7% પાણી પીવાલાયક છે.

ગ્રુપ સભ્યોને અપીલ !!

નજીકના તમામ ડેમોમાં પાણીનું સ્તર ઘટવાથી ભૂગર્ભ જળ સ્તર ઊંડું થયું છે.

એક જવાબદાર નાગરિક તરીકે આપણે પાણીનો બગાડ અટકાવીને પાણીની બચત કરીશું. તમે સરળતાથી કરી શકો છો. :-

1. *રોજરોજ કાર/બાઈક ધોશો નહીં*.

2. *આંગણા / સીડી / માળ ધોવાનું ટાળો અથવા ધોવામાં ઓછામાં ઓછા પાણીનો ઉપયોગ કરો*.

3.. *નળને સતત ચાલુ ન રાખો.*.

4. *બીજા ઘણા સારા ઉપાયો કરીને પાણી બચાવો*.

5. *ઘરમાં લીક થયેલ નળને ઠીક કરો.*

6. *ઝાડના વાસણમાં ઓછામાં ઓછું પાણી નાખો.*

7. *રસ્તા પર પાણીનો છંટકાવ કરશો નહીં*

ચાલો સાથે મળીને આ સંકટનો સામનો કરીએ.

ઉપરોક્ત મેસેજ 5 ગ્રુપમાં મોકલો.. આનાથી જાદુ જેવું કંઈ નહીં થાય, પરંતુ મહત્વપૂર્ણ સમાચાર ફેલાવવાનો સંતોષ ચોક્કસ મળશે અને આવનારા દુષ્કાળમાં પાણી બચાવવાનું પુણ્ય મળશે, ચાર તરસ્યા લોકોની તરસ છીપાશે. બુઝાઈ જશે અને આવનારી પેઢીને પણ પાણી મળશે.

એક સામાજિક ચળવળ

दोस्तों! आप अवश्य अपनी स्कुल की लायब्रेरी में अवश्य पढ़ें होंगे?

कहींओ ने - हां

कहींओ का - ना

कोई बात नहीं 🙏

आप अपनी कॉलेज की लायब्रेरी में तो अवश्य पढ़ें ही होंगे?

सब ने एक साथ - हां कह दी 🙏

आपने वहां ऐसी व्यवस्था देखी होगी -

अनेकों प्रकार के पुस्तकें

अनेकों विषयों के पुस्तकें

अनेकों रंग के पुस्तकें

अनेकों जीवन चरित्रों के पुस्तकें

अनेकों स्नातकों के पुस्तकें

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आपके मन में यही पुस्तकें देख कर कितने ख्यालों आते है पर आप प्राथमिकता अपनी पढ़ाई के विषयों पर ध्यान केंद्रित करके पढ़ते रहते हो 🙏

अपनी डिग्री पा कर हमने जो लायब्रेरी को अलविदा कर दिया वह शायद कभी ख्यालों में नहीं आएगा 🙏

क्यूं?

क्यूंकि हम अपने व्यवसाय में डूब गए

क्यूंकि हम अपने जीवन में खो गए

क्यूंकि हम अपने समाज में खो गए

क्यूंकि हम अपने आपमें खो गए

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

जब कभी कोई मेगज़ीन का कवर

जब कभी कोई शास्त्र की कथा

जब कभी कोई मित्र की पुस्तक की भेंट

तब कुछ हम पढ़ने के लिए अपना मन मोड़ते है 👉

तब हमें कोई अंग्रेजी लेखक, प्रवचन कार और कोई अंग्रेजी आर्टिकल ही पर खुद को केन्द्रित करते है 🙏

क्यूं?

क्यूंकि हम शायद खुद के लिए कम पढ़ते है - दिखावा के लिए ज्यादा 🙏

हम बातें भी करेंगे तो अंग्रेजी लेखक, प्रवचन और आर्टिकल

एक स्टेटस 👉

आज हम आपको एक बात बताते है 🙏

जितने भी अंग्रेजी लेखक, प्रवचन कार और आर्टिस्ट वह हमारे जीवन पद्धति से ही प्रेरणा पाते है और हमें ही हमारी धर्म और संस्कृति और शास्त्रीय सभ्यता से ही हमें उनकी ओर आकर्षित करते है 🙏

जहां हम जीते है वहां ही हमारा सत्य है, सिद्धांत है, शिस्त है, विश्वास है और सुख संपत्ति है 🙏

हम क्यूं ओर भागे! 🌷🙏🌷

सोच लो 🌷🙏🌷

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं निहाले 🙏

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं निहारे 🌷

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं देखे 🙏

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं कल्पे 🌷

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं संकल्पे 🙏

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं झांके 🌷

श्री कृष्ण को कभी हमने अकेले नहीं सोहे 🙏

जो भी कृति निहाली हर रंग में साथ 🙏

हां! अनोखा, अलौकिक और अखंड, अविस्मरणीय 🌷

अर्थात - कोई संकेत, कोई प्रेरणा, कोई संस्कृत, कोई संस्कार 🙏

राधाकृष्ण 🌷 राधाश्याम 🙏 राधाबिहारी 🌷

राधागोविंद 🙏 राधाकान्ह 🌷 राधामाधव 🙏

राधागोपाल 🌷 राधामोहन 🙏 राधामुकुंद 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

क्यूं?

संसार की एक सच्चाई

जगत की एक उंचाई

धर्म की एक विद्याई

जीवन की एक उंडाई

मनुष्य की एक गहराई

यह राधाकृष्ण संवारते है 🙏

प्रेम का अदभुत संस्कार है 🌷

शिक्षा का अनोखा विज्ञान है 🙏

धर्म का अलौकिक स्त्रोत है 🌷

आत्मा का अखंड रस है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

निंदिया न आएं

पलकें न झपकाएं

श्याम तलक न आएं

मंद मंद सांस बहाएं

धड़कन न धकधकाएं

श्याम जबतक न आएं

होठ सिलाएं

कदम लड़खड़ाएं

श्याम नैना न लड़ाएं

श्याम! कैसी प्रीत हमारी

तु दूर दूर दौड़ाएं

इन आंखों को देखिएं

जिन आंखों को देखि न जाएं 🌷🙏🌷

हम इन आंखों को सदा देखते है

जो आंखों से संसार देखा जाएं 🌷🙏🌷

हे प्रभु! तेरा ही हम अंश है 🙏

जित देखूं तित केवल तु ही देखा जाएं 🌷🙏🌷

श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

श्री यमुना! 🌷🙏🌷

श्री गोवर्धन! 🌷🙏🌷

श्री श्रीनाथजी! 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नयन बावरे नयन सांवरे

नयन द्वारें नयन प्यारे

नयन दुलारे नयन पुकारें

नयन गवारे नयन सहारे

नयन विहारे नयन निहारें

नयन खुमारे नयन विसारे

नयन पसारें नयन किनारे

एक ही कान्हा 🌷

एक ही गोपाला 🌷

एक ही वल्लभा 🌷

एक ही गोविंदा 🌷

एक ही माधवा 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

निकल पड़े

यूं ही द्रढता से

यूं ही निडरता से

यूं ही गर्व से

यह मिला न मिला

वह मिला न मिला

कदम कदम बढ़ते चला

दोस्त ने रुक कहा

कुटुंब ने बंध करना कहा

समाज ने ठहरना कहा

मन बार बार झुकाया

धन बार बार रुकाया

तन बार बार घुमाया

जीवन बार बार डराया

एक मन एक तन एक धन और एक जीवन

करना है - बढ़ना है - या ॐ फतेह होना है

धरती कहें - मैं तेरे साथ हूं 🙏

आकाश कहें - मैं तेरा रक्षक हूं 🙏

सूरज कहें - मैं तेरी उर्जा हूं 🙏

सागर कहें - मैं तेरा पोषक हूं 🙏

वायु कहें - मैं तेरा दर्शक हूं 🙏

भगवान कहें - मैं तेरा सारथी हूं 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पैसा
माल मिलकत
गाड़ी बंगला
खेत खलिहान
जर झवेरात
सोना चांदी
हीरा माणिक
नोकर चाकर
कपड़ा अन्न
दोस्त समाज
मान सम्मान
रुप स्वरूप
शिक्षा स्नातक
वंश वंशज
ज़मीन जायदाद
वाह! मेरे पास सबकुछ है 👍
मैं जगत का सबसे धनवान, अमीर और सुख संपन्न 👍
मैं उंचा! 👍
मझा आ गया 👍
समय चलता गया - राह चलते रहे
परिवर्तन होता रहा - परिस्थितियां बदलती रही
बहुत कुछ बदलता रहा 🙏
मैं अकेला 🙏
मेरा एकांत 🙏
नज़र दौड़ती रही 🙏
ठहर गई 🙏
सबकुछ यहां 🙏
केवल चला 🙏
चला चला और चला 🙏
साथ आया - पुरुषार्थ
साथ आई - निष्ठा
साथ आया - विश्वास
साथ आई - सुगंध
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे पीछे कहने वाले तो अनेकों होंगे

पर

मेरे सामने - मेरे प्रत्यक्ष और मुझे अकेले में मेरी बुराई कहने वाला केवल मेरा सही मित्र - मेरी सही सहचरी - मेरे सही जीवनसाथी - मेरे सही वंशज - मेरे सही शिक्षक - मेरे सही आचार्य - मेरे सही मातापिता ही होंगे 🙏

जो जानते है यह व्यक्ति को सही दिशा निर्देश करना ही सही कर्म है - सही पुरुषार्थ है - सही आज्ञा है - सही ज्ञान है - सही सेवा है - सही विद्या है - सही सिद्धि है 🙏

हे सांसारिक व्यक्ति! तु कितना महान हो सकता है 👉

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक युग था जिसमें मनुष्य की उम्र १००० वर्ष थी

एक युग था जिसमें मनुष्य की उम्र ७०० वर्ष थी

एक युग था जिसमें मनुष्य की उम्र ३०० वर्ष थी

एक युग था जिसमें मनुष्य की उम्र २०० वर्ष थी

आज का युग है जिसमें मनुष्य की उम्र ६० से १०० वर्ष आयु है

ऐसा क्यूं?

उम्र की आयु अपने आप पर निर्भर करती है ऐसा यह प्रमाण है 🙏

सत्य आचरण लंबे जीवन का पुरुषार्थ जो हमें सिद्धि और जन्म की योग्यता पुरवार करती है 🙏

किसीने कहां है

उम्र लंबी नहीं जीनेका आनंद है

उम्र छोटी भी हो उन्हें भी अपना आनंद से भर दो 👍

आज का मनुष्य का मनोबल ६० वर्ष का हो गया है 🙏 बस! सांठ से नाठ 🙏

बहुत हो गया! जीवन जी लिया 🙏

सांठ की उम्र तक अपने तन, मन, धन और जीवन को बुढा कर दिया 🙏

बुढा से बुझा दिया अपने आत्मा का दीपक

मन को मनवा दिया संसार में डूबो कर

तन को तोड दिया भटक भटक कर

धन को खो दिया इकठ्ठा कर कर

जीवन के वृक्ष को जला दिया संशय भर कर

हम क्या?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन की कहानी है यह

हर आत्मा की रुहानी है यह

जनम जनम की प्यास है

सुख दु:ख की गुहार है यह

एक एक जीव भटके ढहर ढहर

कहीं कहीं देश विदेश शहर

ऐसी ही कहानी है यह

नैनों से बरसे बदरा

बदरो से बहे नदी सागर

यही है सांसों की धारा

यही ही एक दूसरे का सहारा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मन मधुर मनन करे

चित्त चतुर चित्तवन धरे

जागे नयन दर्शन श्री नाथ

मन मधुर मनन करे

पुष्टि पथ की दासी हूं मैं

श्री श्रीनाथजी की प्यासी हूं मैं

जनम जनम यांचु भक्ति दीवानी रे

निकट निकट रखियों तेरी गली रे

मन मधुर मनन करे

चित्त चतुर चित्तवन धरे

जागे नयन दर्शन श्री नाथ

मन मधुर मनन करे

श्री वल्लभ की बंधी मैं

श्री यमुना की रंगी मैं

घट घट चाहूं प्रेम सुहासी रे

अपलक नैन दरश निहारी रे

मन मधुर मनन करे

चित्त चतुर चित्तवन धरे

जागे नयन दर्शन श्री नाथ

मन मधुर मनन करे

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार नदी अपने पिया सागर से कहती है - हे प्रिये!

आप इतने विशाल और अनेकों रत्नों से भरे हो। मुझे आपको कुछ देना हो तो क्या दे सकती हूं?

सागर ने मुस्कुराते हुए कहा - प्रिये! तुमने मुझे क्या नहीं दिया! अपने आपको दे दिया है तो और मुझे क्या चाहिए?

नदी ने कहा - प्रिये! कुछ तो मांगो!

मैं जब अति उन्माद और नाचती कुदती गाती तुम्हें मिलने आती हूं तो मैं पर्वत, जंगल, धरती और आसमान से बरसती गरजती तुम्हारे पास आती हूं तब मुझमें सारा जगत मुझमें समा जाता है और तुम्हें सबकुछ सोंप देती हूं, फिर भी तुम्हें कुछ भी चाहिए तो मुझसे कहो - मैं अवश्य तुम्हें समर्पित करुंगी 🙏

सागर ने मुस्कुराते हुए कहा - हे देवी! तुम मेरे लिए जो चाहूं वह ला पाओगी?

नदी ने कहा - अवश्य! आप कहो और मैं न ला पाऊं!

सागर ने विनम्रता से कहा - हे देवी! मेरे लिए - घास की चार तिनका ला दो 🙏

नदी ने कहा - अरे! यह क्या मांगा?

नदी अति प्रचंड हास्य करके दौड़ी और घास की चार तिनका लाने अपना रुद्र रूप धारण करके घास के मैदान में थडकने लगी, घास के मैदान से घास को उखाड़ फेंकने की शक्ति जुटाने लगी। एक घास का तिनका न तूटा और छूटा, नदी थर्राने लगी तो भी न तीनका तूटा और छूटा, अब नदी बहुत ही रुद्रता और क्रूरता रुप धर के घास पर तूट पड़ी पर एक तिनका न तूटा। नदी थरथराती रही, घरघराहटी रही पर घास न तूटा और छूटा।

वह सोचने लगी - मैं पर्वत, जंगल, धरती और आसमान को तहस नहस करती और यह घास मुझसे नहीं उखड़ रहा है?

इतने में सागर लहराते नदी के पास आया और कहा - प्रिये! छोड़ो! मुझे कुछ नहीं चाहिए 🙏 बस मुझे सिर्फ तुम्हारी निर्मलता चाहिए 🙏 यही ही तुम्हारा अदभुत प्रेम रस है, जो सदा मुझे मधुर लगता है 🙏

नदी शरमा गई और झुक गई 🙏

प्रियेश! 🌷🙏🌷

ओ मैया रे! 🌷🙏🌷

सोच लो! 🌷🙏🌷

सोचों 🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मिल मिल कर जुदाई

एक एक कर अलग-अलग

कैसी है रीत प्रेम की रवाई

कब कहां और कैसे दूरी

जाने जुड़े साथ हर कोई

ऐसी सगाई बंधे उम्र जगाई

हर आत्म ने पाईं प्रीत जुदाई

कोई भक्त सखा सखी धराईं

नाम बदनाम श्याम रामाईं

राधा मीरा गोप गोपी घवाईं

निड़र निराली अखंड विश्वासईं

ब्रह्म ब्रह्मांड रज रज बिछाईं

हर कोई हर हरि दूरी स्वीकारी

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

प्रियतम प्रेम अनुयायी 🌷🙏🌷

हे जगत!

मुझे माफ़ करना 🙏 मेरे अथाग प्रयत्न से जो मुझमें आमूल परिवर्तन चाहता हूं जो सैद्धांतिक है, जो सत्य निष्ठित है, जो विश्वास भरा है, जो धर्म धरणी है 🙏 वह मैं नहीं कर पा रहा हूं 🙏

१. मेरा मन स्थिर है पर यह संसार में मुझे रहना है तो वह विचलित तो अवश्य होगा क्यूंकि मुझे इनके साथ रहना ही होता है 🙏 चाहे मैं अपने आपको कितना भी स्थिर करने की कोशिश करुं 🙏

न कोई तितिक्षा 🙏

न कोई अपेक्षा 🙏

न कोई अभिप्सा 🙏

न कोई चाह 🙏

न कोई प्यास 🙏

न कोई आश 🙏

तो भी मुझे अस्थिर रहना ही है - यही ही उपलब्धि है 🙏

हां! इतना अवश्य कह सकता हूं कि मैं अपने मन को स्थिर और स्थिर और स्थिर करने का उत्तम पुरुषार्थ करता रहूंगा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

હે જીવન!

ભણ્યો ગણ્યો અનુભવ મેળવ્યો

તો પણ બે બાજુ ની જીંદગી 🙈

પોતાનું હોય તો અલગ

બીજાનું હોય તો અલગ

એક ને કંઈક કહેવાનું

બીજાને કંઈક કહેવાનું

પોતે કંઈક અલગ કરવાનું

ગજબ છે બે બાજુ ની જીંદગી 🙈

નયન અલગ તો પણ મેળવવાનાં

મન અલગ તો પણ સરખાવવાનાં

તન અલગ તો પણ અથાડવાનાં

ધન અલગ તો પણ લુંટવાનાં

અન્ન અલગ તો પણ અભડાવવાનાં

જીવન અલગ તો પણ સંતાડવાનાં

કર્મ અલગ તો પણ ઉંચ નીચવવાનાં

ધર્મ અલગ તો પણ ડૂબાડવાનાં

સાચેજ કેવો જન્મ?

સાચેજ કેવું શિક્ષણ?

સાચેજ કેવા સંસ્કાર?

સાચેજ કેમ સંસાર?

બસ! એક જ શબ્દ - કળયુગ 🙈

હું કેવો અભાગી - માનવ યુગ 🙈

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌹🙈🌹

मैं डॉक्टर हूं 🙏
मैं वकील हूं 🙏
मैं स्नातक हूं 🙏
मैं व्यापारी हूं 🙏
मैं शिक्षक हूं 🙏
मैं प्राध्यापक हूं 🙏
मैं नेता हूं 🙏
मैं अमीर हूं 🙏
मैं तवंगर हूं 🙏
मैं संगीत वादक हूं 🙏
मैं पंडित हूं 🙏
मैं गरीब हूं 🙏
मैं यह हूं 🙏 मैं वह हूं 🙏
एक सिमित कक्षा में हूं 🙏 बस केवल पैसा - धन दौलत - बंगला गाड़ी - हरिफाई में दौड़ता दौड़ता और दौड़ता हूं 🙏
खुद को पैसा की उपलब्धि से तोलना और टटोलना
ऐसे ही ख़ुद की नजर, द्रष्टि और सृष्टि
बस ऐसे ही कुटुंब, समाज और संसार 🙏
सच में हम कितने सिमित है कि हमारा जन्म यही के लिए है
तो सूरज क्यूं सबको रोशनी देता है 🙏
तो पर्वत क्यूं सबको संवर्धन करता है 🙏
तो धरती क्यूं सबको सुरक्षित करती है 🙏
तो नदी क्यूं सबको तृप्त करती है 🙏
तो आकाश क्यूं सबको सांसें देता है 🙏
तो वायु क्यूं सबका वहन करता है 🙏
यह सब उपलब्धियों का भंडार है और हम एक उपलब्धि में जीना जी लिया! सबकुछ पा लिया!
नहीं! नहीं! नहीं!
हम परमात्मा के अंश है तो परमात्मा तो सिमित नहीं है तो हम कैसे?
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि भाग - ५३

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक

Vibrant Pushti

५३, सुभाष पार्क सोसायटी, संगम चार रास्ता, हरणी रोड

वडोदरा - ३९०००६ गुजरात भारत

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 93272 97507